लेखक की ओर से

यह शहीदे आज़म भगतसिंह की जन्मशती का अवसर है।

बर्तानवी हुक्मरानों के खिलाफ छिड़े 1857 के संग्राम के डेढ़ सौ साल पूरे होने के मौके पर समूचे मुल्क में इन दिनों जश्न की तैयारियां हैं।

आम लोग उन तमाम नामी-अनाम शहीदों की कुर्बानियों से, उस समृद्ध साझी शहादत एवं साझी विरासत से नये सबक ग्रहण करने की प्रेरणा ले रहे हैं।

ऐसे वक्त़ यह देखना तकलीफदेह है कि इसी मुल्क के एक कोने में लोगों का एक हिस्सा उन ताकतों के साथ कदम मिला रहा है, जिन्होंने आज़ादी के इस महान संघर्ष से अपने-आप को दूर रखा था। ये वे ताकतें हैं जो इस मुल्क की गंगा-जमनी तहजीब को, साझेपन पर टिके उसके ताने-बाने को ख़त्म करने पर तुली हैं। ये वे ताकतें हैं जो गुजरात 2002 के रक्तरंजित प्रयोग को समूचे देश भर में फैलाना चाहती हैं।

प्रस्तुत पुस्तिका पूर्वी उत्तर प्रदेश को 'हिन्दुत्व की प्रयोगशाला' बनाने के ऐसे ही एक प्रयोग की विवेचना करती है और यह समझने की कोशिश करती है कि ऐसी ताकतों को फौरी 'सफलता' क्यों मिल रही है ।

अगर इसे पढ़ कर कोई इस इन्सानदुश्मन परियोजना के बारे में सचेत हो जाएगा, तो यह मेरे लिये बड़ी सफलता होगी।

subhash.gatade@gmail.com

1

नये तरह के 'सम्राटों' का आगमन

राजाओं-रजवाड़ों का जमाना भले ही बीत चुका हो, जंग लगे उनके सिंहासन कहीं-कहीं कबाड़ी बाज़ार में बेच दिये गये हों, उनकी शानो-शौकत-अय्याशियों एवं जुल्मों की कहानी दास्तानगोई का विषय बनी हो, लेकिन इसकी वजह से लोकतंत्र में एक अलग तरह के 'सम्राटों' का उद्‌भव रुक नहीं पाया है।

ये नये तरह के 'सम्राट' हैं। यह जुदा बात है कि न किसी राज्याभिषेक के तहत वहां पहुंचे हैं, न इनके आगमन पर कोई कारिन्दे चिल्ला उठते हैं 'बा अदब, बा मुलाहिजा, होशियार' और न ही ये अपने खानदान का रिश्ता किसी राजा-महाराजा के खानदान के साथ जोड़ते दिखते हैं, उल्टे वे इस बात को ही रेखांकित करते हैं कि वे सतह से उठे हैं।

कह सकते हैं कि इनके मुरीदों ने उन्हें यह उपाधि दी है, जो इन 'सम्राटों' की दीवानी है। हां, इनमें और पुराने सम्राटों में एक समानता जरूर है - दरअसल ये नये सम्राट कब अपने जुबान से आग उगलने लग जायें और कब प्रजा के एक हिस्से का वजूद खतरे में पड़ जाय, इसका अन्दाज़ा लगाना भी मुश्किल है।

आप ने ठीक पहचाना हम सेक्युलर अर्थात धर्मनिरपेक्ष कहलाने वाले इस मुल्क में धीरे-धीरे बढ़ती जा रही 'हिन्दू हृदय सम्राटों' की बात कर रहे हैं।

पहले तो बम्बई की सत्ता के रिमोट कंट्रोल बने हुए जनाब शिवसेना के बाल ठाकरे को ही इसमें शुमार किया जाता था, लेकिन अब इसमें कुछ अन्य नाम भी जुड़ गये हैं या जुड़ते ही जा रहे हैं। कुछ राष्ट्रीय स्तर के, कुछ सूबाई स्तर के और कुछ शहर या मोहल्ला स्तर के। गुजरात के वर्ष 2002 के जनसंहार के बाद सूबे के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी जहां इसी कतार में शामिल

किये गये, वहीं विश्व हिन्दू परिषद के अशोक सिंघल या प्रवीण तोगड़िया भी इसी में शुमार किये जाने लगे। अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि अहमदाबाद के नरोदा पाटिया जनसंहार का मुख्य अभियुक्त बाबू बजरंगी जिसके 'पराक्रम' के मद्देनज़र विश्व हिन्दू परिषद ने उसके लिए 'धर्माचार्य' जैसे पद का सृजन किया, उसके मुरीद भी उसे इसी नाम से पुकारते होंगे।

अलबत्ता इस आलेख में हम इन ज्यादा चर्चित हिन्दू हृदय सम्राटों से रू-ब-रू नहीं हैं। न हम बाल ठाकरे के बारे में बात करेंगे और न ही नरेन्द्र मोदी से रू-ब-रू होंगे और ना ही गुजरात के 2002 के जनसंहार को 'सफल प्रयोग' कहने वाले सिंघल या उनके सहकर्मी तोगड़िया पर कलम चलाएंगे या नैतिकता एवं संस्कृति के स्वयंभू रक्षक कहे जाते बाबू बजरंगी की कोई चर्चा करेंगे।

दरअसल बात यह नहीं है कि राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों की निगाह में विवादास्पद इन शख्सियतों के बारे में लिखने की जरूरत नहीं है। सभी जानते हैं कि इनकी कारगुजारियों के बारे में कई-कई ग्रंथों की दरकार है, ताकि हम याद रख सकें और आने वाली पीढ़ियों को बता सकें कि बीसवीं सदी की अन्तिम दहाई या इक्कीसवीं सदी की शुरुआती दहाई में आम कहलाने वाले लोग किस तरह ऐसे 'सेनापतियों' की बदौलत जुनूनी दस्तों में तब्दील किये जा सके थे। महान फ्रेंच दार्शनिक वाल्तेयर ने ऐसी ही शख्सियतों के बारे में शायद लिखा था : 'Those who can make you believe absurdities, can make you commit atrocities'

एक ऐसे समय में जबकि केन्द्र में सेक्युलरिजम का नारा लगाने वाली हुकूमत के बनने के बाद लोग इस मसले पर गाफ़िल से हो गये हैं, हमें इन चीज़ों के बारे में निरन्तर बताते रहने की जरूरत है। वक्त़ कितना बदल सा गया है। इन दिनों 2002 के जनसंहार में 'नीरो' जैसी उनकी भूमिका की नहीं बल्कि गुजरात में अधिक पूंजीनिवेश लाने के मामले में नरेन्द्र मोदी की महारत की चर्चा हो रही है और बाल ठाकरे 1992-93 के बम्बई दंगों में (बकौल श्रीकृष्ण आयोग) 'सेनापति' जैसी अपनी भूमिका के लिये नहीं बल्कि महानगरपालिका के चुनावों में उनके द्वारा की गई कुछ फूहड़ टिप्पणियों के लिए याद किये जा रहे हैं।

2

पूर्वांचल में रहना हो तो ...

प्रस्तुत आलेख इन नामचीन 'हिन्दू हृदय सम्राटों' के बारे में नहीं है। यह एक ऐसे शख्स और उसकी सरगर्मियों के बारे में हैं, जिसके बारे में कम-से-कम राष्ट्रीय मीडिया में ज्यादा बात नहीं हो पायी है। यह जुदा बात है कि उम्र के आखिरी पड़ाव पर हिन्दुत्व के ढहते दुर्ग को देखने को मजबूर बाल ठाकरे या अधेड़ावस्था में पहुंचे नरेन्द्र मोदी की तुलना में काफी जवान इस शख्स की कारगुजारियां ठाकरे-मोदी टोली के कारनामों से किसी भी मायने में कम नहीं हैं। बाल ठाकरे ने अगर बम्बई और शेष महाराष्ट्र की सियासत को केसरिया रंग में ढाल दिया, नरेन्द्र मोदी अगर गुजरात को 'हिन्दुत्व की प्रयोगशाला' बनाने में कामयाब हुए तो इस शख्स के निशाने पर पूर्वी उत्तर प्रदेश है, जहां पर वह अपने इन्हीं पूर्ववर्तियों के नक्शेकदम पर चलने को आमादा है। वैसे अपने प्रोजेक्ट को अंजाम देने में ठाकरे और मोदी को जो सहूलियत हासिल नहीं थी वह इस शख्स को हासिल हुई है। इस इलाके में सदियों से सम्मान प्राप्त गोरक्षनाथ पीठ का उत्तराधिकारी होने का इसने भरपूर फायदा उठाया है।

> गोरक्षनाथ या गोरखनाथ सम्भवतः 11वीं या 12वीं सदी के नाथ योगी कहे जाते हैं जो मत्स्येन्द्रनाथ के प्रमुख शिष्य के तौर पर शैव सम्प्रदाय से जुड़े। गोरखनाथ की आध्यात्मिक विरासत के बारे में कई मत हैं। सभी आदिनाथ और मत्स्येन्द्रनाथ को उनके दो पूर्ववर्ती गुरुओं के तौर पर रखते हैं। वर्तमान समय में आदिनाथ को भगवान शिव के तौर पर चिन्हित किया जाता है जो मत्स्येन्द्रनाथ के प्रत्यक्ष शिक्षक थे।

> गोरखनाथ के समय में ही नाथ परम्परा का जबरदस्त विस्तार हुआ। उन्होंने कई सारी रचनायें कीं और आज भी उन्हें नाथों में सबसे बड़ा समझा जाता है। हिन्दुस्तान में कई सारी गुफायें हैं, जिन पर मन्दिर भी बने हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि गोरखनाथ ने वहां ध्यान-धारणा की। गोरखनाथ के बारे में कहा जाता है कि भारतीय उपमहाद्वीप में उन्होंने काफी भ्रमण किया और उनके बारे में वृत्तांत अफगानिस्तान, बलुचिस्तान, पंजाब, सिंध, उत्तर प्रदेश, नेपाल, असम, बंगाल, महाराष्ट्र और यहां तक कि श्रीलंका में भी मिलते हैं। नेपाल के गोरखा लोगों ने इसी सन्त से अपना नाम ग्रहण किया है। गोरखपुर जिले का नाम भी गुरु गोरखनाथ से ही निकला है।

पिछले चन्द सालों के अन्दर ही गोरखपुर एवं आस-पास का इलाका जिस तरह 'हिन्दुत्व की प्रयोगशाला' बना है, उसमें इस बात का प्रमाण देखा जा सकता है। यह अकारण नहीं कि स्वाधीनता संग्राम में अपनी ऐतिहासिक भूमिका के लिये नवाजा जाता पूर्वी उत्तर प्रदेश, आज़ादी के बाद के दौर में कम्युनिस्ट एवं जनवादी ताकतों की आधारभूमि रहा यह इलाका अब एक ऐसे 'योगी' की समरभूमि बना है, जो हिन्दुत्व के अपने उग्र एजेण्डा के साथ उपस्थित है।

यह वही योगी आदित्यनाथ हैं जिनके खड़े किये संगठनों के लोगों ने, संघ परिवार के तमाम कार्यकर्ताओं के साथ मिल कर पिछले दिनों पूर्वी उत्तर प्रदेश के तमाम जिलों में हिंसा का तांडव रचा था।

यह वही योगी आदित्यनाथ हैं जिन्होंने गोधरा की दुःखद घटनाओं का बहाना बना कर जब सूबे में जनसंहार को अंजाम दिया जा रहा था, एक विशाल जनसभा में कहा था : 'मैंने मोदी जी से बात की है और उनसे कहा है कि हमारी तरफ से एक विकेट गिरने पर दूसरे पक्ष की दस विकेट लेना। अपने घरों पर केसरिया झण्डा फहराइये और अपने अड़ोस-पड़ोस के मुसलमानों की संख्या गिनिये। हमें जल्द ही कुछ करना पड़ सकता है।' (इण्डियन एक्सप्रेस, वर्गीज जॉर्ज की रिपोर्ट - परिशिष्ट)

यह वही योगी आदित्यनाथ हैं जिनके बारे में लिखे अपने आलेख में 'द मिल्ली गैज़ेट' (The Milli Gazette) ने चार साल पहले कहा था

'हिन्दू हितों के स्वयंभू रक्षक और गोरखपुर से सांसद योगी आदित्यनाथ पूर्वी उत्तर प्रदेश को 'गुजरात' बनाना चाहते हैं। उन्होंने और लम्पट तत्वों से बनी उनकी मिलिशिया ने गोरखपुर, देवरिया, सिद्धार्थनगर और पूर्वी उत्तर प्रदेश के अगल-बगल के जिलों में आतंक का माहौल कायम किया है।' 'Yogi preaching hate : Attempts to repeat Gujarat in eastern UP' 'शीर्षक उपरोक्त लेख में एक तरह से भविष्यवाणी भी कर दी गयी थी : 'आम तौर पर पूर्वी उत्तर प्रदेश और खासकर गोरखपुर में एक अजीब सी खामोशी फैली हुई है और अगर राज्य सरकार ने अपना अनमना रवैया जारी रखा तो यह 'योगी' पूर्वी उत्तर प्रदेश के सामाजिक ताने-बाने को ध्वस्त कर देगा।'

यह अकारण नहीं कि 'उत्तर प्रदेश अब गुजरात की राह?' शीर्षक अपनी साझा जांच रिपोर्ट राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को भेजते हुए (5 जुलाई 2002) में 'पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज' एवं 'इन्साफ' ने आयोग के अध्यक्ष के सामने 'शुद्ध जघन्य आपराधिक कुकृत्यों' को 'साम्प्रदायिक झगड़े का रूप' देने की योगी आदित्यनाथ की हरकतों एवं पुलिस व प्रशासन द्वारा 'योगी के आक्रामक रुख के समक्ष सुरक्षात्मक रहने की नीति' के चलते 'मुस्लिमों में भारी भय और आतंक का माहौल पैदा' होने की चर्चा की थी। पुलिस प्रशासन के भारी पैमाने पर साम्प्रदायीकरण और योगी द्वारा उन्हें खुलेआम निर्देशित करने की परिघटना का विशेष उल्लेख करते हुए उन्होंने 'कानून का राज्य' स्थापित करने के लिए विशेष कदम बढ़ाने की आयोग से अपील की थी।

साफ है अगर उसी वक्त़ कार्रवाई होती तो कम-से-कम आज की तारीख में पूर्वी उत्तर प्रदेश के भारी हिस्सों को फिरकेवाराना उन्माद से बचाया जा सकता था ! साफ है अगर उसी वक्त 'कानून का राज' कायम करने के लिए कदम बढ़ाये जाते, तो पहले गोरखपुर तक ही सीमित इस परिघटना का असर अगल-बगल के जिलों में नहीं दिखता। निश्चित ही उन दिनों केन्द्र में सत्तासीन भाजपा की अगुवाई वाली गठबन्धन सरकार को देखते हुए - जिसने गुजरात 2002 के जनसंहार में अपनी भूमिका के सिलसिले में मोदी का लगातार बचाव किया- और राज्य में तैनात भाजपा की मित्र सरकारों के चलते और किसी सशक्त प्रतिरोध आन्दोलन की गैर-मौजूदगी में ऐसा होना लगभग नामुमकिन था।

अब सबके सामने है कि योगी आदित्यनाथ के उग्र हिन्दुत्व के प्रयोग का

जादू किस हद तक लोगों के एक हिस्से के सिर चढ़ कर बोल रहा है। और हम इस विचित्र हक़ीकत से रू-ब-रू हैं जहां सूबे के स्तर पर भाजपा के सितारे लगातार गर्दिश में जा रहे हैं और पूर्वी उत्तर प्रदेश इसका अपवाद दिख रहा है। इसकी पड़ताल करने की जरूरत है कि इसमें योगी का योगदान अहम है या भाजपा-संघ परिवार की भूमिका निर्णायक रही है।

पिछले दो महीने में जिस तरीके से घटनाक्रम विकसित हुआ है, उसके चलते राष्ट्रीय मीडिया में सुर्खियों में आने में योगी कामयाब हुए हैं। दिसम्बर माह में वहां आयोजित विश्व हिन्दू सम्मेलन में समुदाय विशेषों के प्रति विद्वेष पैदा करने वाले वातावरण की निर्मिति हो या जनवरी के अन्त में मामूली सी लगने वाली घटना के बड़े साम्प्रदायिक दंगे में तब्दील हो जाना हो, शेष मुल्क जान गया है कि इलाके में चर्चित हो चुका नारा 'पूर्वांचल में रहना होगा तो योगी, योगी कहना होगा' किस कदर कहर बन कर मासूमों पर बरस रहा है।

वैसे यह प्रश्न भी एक गहन विश्लेषण की मांग करता है कि दूसरी राजनीतिक शक्तियों के बरअक्स - जिन्हें हम स्थूल रूप में गैरसाम्प्रदायिक/सेक्युलर धारा का हिस्सा मान सकते हैं - हिन्दुत्व की इस आक्रामक अभिव्यक्ति की 'कामयाबी' किन कारणों से है? क्या यह कहा जा सकता है कि ऐसी सेक्युलर ताकतों की फौरी गलतियों के चलते, उनके द्वारा अंजाम दिये गये गलत राजनीतिक ध्रुवीकरण के चलते उन्हें मौका मिलता है या हिन्दुस्तान की सामाजिक-सभ्यतात्मक संरचना ऐसी है कि वह उग्र हिन्दुत्व के प्रयोग के लिए मुफीद जान पड़ती है?

साम्प्रदायिकता की परिघटना को छद्म चेतना की धारणा के अन्तर्गत अब तक समझते आ रहे सभी लोगों के लिए चाहे गुजरात 2002 में हुआ मोदी का उभार हो या पूर्वी उत्तर प्रदेश की योगी परिघटना, नये प्रश्नों को जरूर सामने ला खड़ा कर देती है ! कहीं ऐसा तो नहीं कि हमने अपने हस्तक्षेप को राजनीतिक-आर्थिक दायरे तक ही सीमित रखा है और सामाजिक-सभ्यतात्मक मसलों की अनदेखी की है? इसमें कोई दो-राय नहीं कि समुदायों को आपस में भिड़ा कर अपने राजनीतिक-सामाजिक आधार के विस्तार में लगी ऐसी ताकतें इन्सानदुश्मन हैं, आपराधिक हैं और उनका पुरजोर विरोध होना चाहिये ; लेकिन क्या यह प्रश्न पूछने का वक्त़ नहीं आया है कि हमारे हस्तक्षेप की, हमारे समाज की ऐसी क्या सीमायें हैं कि लोग उनके

बहकावे में आकर जुनूनी दस्तों में तब्दील हो जाते हैं?

प्रख्यात मार्क्सवादी विचारक प्रोफेसर एज़ाज अहमद कहीं लिखते हैं कि 'Everty Country Gets The Fascism It Desereves'. तो क्या यह कहा जाना चाहिये कि हमारे मुल्क को भी धर्मयुद्धों के एक नये दौर से गुजरना पड़ेगा तभी यहां सही मायने में जनतंत्र स्थापित हो सकेगा?

3

हिन्दुत्व की नयी तरुणाई के प्रतीक?

आदित्यनाथ, जन्म तारीख : 5 जून, 1972, राजनीतिक अनुभव : 1998 और 1999 में गोरखपुर से लोकसभा का चुनाव जीता। 12वीं लोकसभा में 26 साल के आदित्यनाथ उसके सबसे युवा सदस्य थे। युवा योगी हिन्दू महासभा के पूर्व अध्यक्ष महंत अवैद्यनाथ के गोरखनाथ मन्दिर में उत्तराधिकारी हैं और वह हिन्दुत्व के एजेण्डा के वाहक हैं। शिक्षा : गढ़वाल विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. (गणित) .. प्रिय परियोजनायें : शिक्षा और गोशालायें। उनके कार्यालय का दावा है कि सांसद महोदय ने, 18 शैक्षिक संस्थान जिसमें एक पॉलिटेक्निक भी शामिल था, की नींव डालीं और गोरखपुर में 15 गोशालायें हैं। ..उनके कार्यालय का यह भी दावा है कि अपने संसदीय क्षेत्र से बांगलादेश भेजे जा रहे गोमांस की स्मगलिंग पर उन्होंने रोक लगायी।

('मीट हिन्दुत्वाज! यंग फ्लैग बेयरर' टाइम्स ऑफ इण्डिया डॉट कॉम, पारुल गुप्ता, शुक्रवार, 9 अप्रैल, 2004)

पूर्वी उत्तर प्रदेश का गोरखपुर शहर और आस-पास का इलाका लम्बे समय से हिन्दुत्ववादी संगठनों विशेषकर संघ, हिन्दू महासभा के निशाने पर रहा है। यह महज संयोग नहीं था कि सरस्वती शिशु मन्दिरों की जो श्रृंखला संघ ने शुरू की जिसने बाद में व्यापक रूप धारण किया उसकी एक तरह से शुरुआत यहीं हुई थी। वर्ष 1952 में यहां संघ द्वारा संचालित पहला स्कूल खोला गया था।

लेकिन यह इस शहर की जनतांत्रिक शक्तियों की निरन्तर दखल का नतीजा रहा है कि इस शहर में साम्प्रदायिक शक्तियां कभी सिविल समाज पर हावी नहीं हो सकी हैं। यह अकारण नहीं था कि न मुल्क के बंटवारे के वक्त़ और ना ही 1992 में बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद यहां कोई साम्प्रदायिक दंगा हुआ था।

यह सही है कि यह इलाका आजादी के पहले के दिनों में यहां से गये गिरमिटिया मजदूरों या आजादी के बाद भी काफी उपेक्षित सा रहा है। नेपाल से सटे इस इलाके में माफिया गिरोहों की सरगर्मियां भी लम्बे समय से चर्चा में रही हैं, लेकिन कुछ माफिया सरगनाओं के मारे जाने या कुछ के राजनीति में चले जाने से वह बात भी मद्धिम हो चली है। यूं तो पहले से ही यह इलाका उपेक्षित रहा है लेकिन फर्टिलायजर कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया के बन्द होने या इलाके की 25 में से 10 से ज्यादा चीनी मिलें बन्द होने, यहां तक कि रेलवे के वर्कशॉप्स भी बन्द होते जाने से क्षेत्रीय युवाओं की बेरोजगारी की समस्या में इजाफा हुआ है।

अलबत्ता पिछले डेढ़-दो दशकों से समूची स्थिति में गुणात्मक बदलाव आया है और हाल के समयों में यह इलाका 'उग्र हिन्दुत्व' के अलग तरह के हस्तक्षेप के लिये कुख्यात हो चला है। अब यहां सरेआम अल्पसंख्यक समुदाय विरोधी नारे लगते हैं, 'एक के बदले दस को लेने की' भड़काऊ बातें चलती हैं, दो लोगों के बीच आपसी मामूली झगड़े को या किसी आपराधिक कार्रवाई को दो समुदायों के बीच कलह की शक्ल प्रदान की जाती है।

कहने के लिए, भले ही पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. की गतिविधियों या कथित तौर पर धर्मांतरण में मुब्तिला ईसाई मिशनरियों की कार्रवाइयों पर इसका दोषारोपण किया जाता हो, लेकिन अगर बारीकी से देखें तो इस पूरे इलाके को कुछ सालों के अन्दर ही सरकारी जुबान में कहें तो 'साम्प्रदायिक तौर पर संवेदनशील' जिलों की श्रेणी में ला खड़ा करने में गोरक्षनाथ पीठ के उत्तराधिकारी भाजपा के सांसद योगी आदित्यनाथ की केन्द्रीय भूमिका नज़र आती है। इसे विडम्बना ही कहा जाएगा कि भारतीय सन्त परम्परा के महान सन्त गोरखनाथ और उनका नाथ सम्प्रदाय, जो न मूर्तिपूजक था और जिसने निरन्तर वर्णव्यवस्था और सनातनी कर्मकाण्ड का विरोध किया, उनके नाम से जारी अग्रणी मठ मनुवाद के एजेंडे को लागू करने के लिये प्रतिबद्ध हिन्दुत्व ब्रिगेड की सियासत का मोहरा बना दिया गया है।

क्या यह आश्चर्यजनक नहीं कि संविधान की कसमें खाकर सांसद बने योगी आदित्यनाथ के संविधान विरोधी आचरण पर, एक समुदाय विशेष के खिलाफ निरन्तर विषवमन करने की तथा उसके खिलाफ प्रत्यक्ष कार्रवाइयां करने के लिए जनता को विभिन्न तरीकों से उकसाने की उनकी रणनीति के बारे में विभिन्न जनपक्षीय समूहों, संगठनों द्वारा लम्बे समय से सचेत करते रहने के बावजूद शेष मुल्क में इस परिघटना पर कोई गम्भीर चर्चा मुमकिन नहीं हो सकी है।

गौरतलब है कि आधिकारिक तौर पर भाजपा के सांसद लेकिन व्यवहार में उसके अनुशासन को ताक पर रख कर उसके द्वारा खड़े किये प्रत्याशियों को हराने वाले, उसके खिलाफ खुल कर प्रचार करने वाले इस सांसद के सामने समूची पार्टी भी नतमस्तक है। 'अनुशासन की रात-दिन दुहाई देने वाले' संघ परिवार के अग्रणियों से लेकर भाजपा के शीर्षस्थ नेताओं में से कोई भी इस मसले पर गौर नहीं करना चाहता कि किस तरह उपरोक्त सांसद ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के तमाम इलाकों में एक समानान्तर नेटवर्क खड़ा किया है और उसका इरादा पूर्वी उत्तर प्रदेश में 'किंग मेकर' बनने का है। अब जहां तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सवाल है तो अपने आनुषंगिक संगठन भाजपा की बुरी गत के बारे में चिन्तित हुए बिना 1984 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को समर्थन देकर उसने इस बात को उजागर किया है कि उसकी वफादारी हिन्दुत्व के एजेंडे के प्रति है, लिहाजा यहां पर भी योगी पर उसका वरदहस्त है।

हाल के समयों में जब से नेपाल में राजशाही को शिकस्त मिली है और दुनिया के एकमात्र 'हिन्दू राष्ट्र' के तौर पर नवाजे जाते नेपाल को भी धर्मनिरपेक्ष मुल्क घोषित किया गया है, तब से उग्र हिन्दुत्व के इस प्रयोग में एक अतिरिक्त आयाम जुड़ गया है। नेपाल के राजमहल समर्थक तत्वों के साथ मिल कर वहां जारी ऐतिहासिक शान्ति प्रक्रिया को बाधित करने की संगठित एवं सुचिंतित योजना में वह जुड़ा है। यह अकारण नहीं था कि नेपाल में राजशाही के पतन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले माओवादी नेता प्रचण्ड ने पिछले दिनों काठमाण्डू में पत्रकारों को बताया कि किस तरह '..देश में शान्ति प्रक्रिया को बाधित करने के लिये महल समर्थक कुछ तत्व भारत के 'हिन्दू अतिवादियों' के साथ मिल कर षड्यंत्र रच रहे हैं।' उन्होंने यह भी कहा कि नेपाल से राजतंत्र समर्थक कुछ लोग हाल ही में विश्व हिन्दू महासंघ के सम्मेलन में भाग लेने के लिए गोरखपुर गए थे,

ताकि महल के पक्ष में हिन्दू अतिवादी ताकतों को एकजुट किया जा सके।' (षड्यंत्र रच रहे हैं भारत के 'हिन्दू अतिवादी' : प्रचण्ड, दैनिक भास्कर, 25 जनवरी 2007, दिल्ली संस्करण)

मीडिया जिसे जनतंत्र का प्रहरी कहा जाता है, उसके बढ़ते स्थानीयकरण ने भी समस्या को गम्भीर बनाने में योगदान दिया है, विशेषकर हिन्दी प्रिन्ट मीडिया का रेकॉर्ड इस मायने में एकांगी ही कहा जा सकता है जहां उसका बहुमत इस बहती धारा में जुड़ गया दिखता है। दिसम्बर माह में विश्व हिन्दू सम्मेलन के आयोजन को जिस तरह हिन्दी प्रिन्ट मीडिया के बड़े हिस्से ने अपना आयोजन बना डाला और राज्य सरकार से नजदीकी रखने वाले एक राष्ट्रीय अख़बार ने जिस तरह तीनों दिन 'सम्मेलन' पर केन्द्रित गेरुआ रंग में रंगे सप्लीमेंट पेश किये, उसने 80 के दशक के अन्त में हिन्दी मीडिया के बड़े हिस्से की उस घृणित भूमिका की याद ताजा कर दी है।

लोगों को याद होगा कि उन दिनों रामजन्मभूमि के नाम पर विश्व हिन्दू परिषद एवं संघ परिवार के आनुषंगिक संगठनों द्वारा जारी आन्दोलन अपने उरूज पर था, हिन्दी प्रिन्ट मीडिया के 'हिन्दू' मीडिया में हुए रूपान्तरण पर प्रेस काउन्सिल ने सख्त टिप्पणियां की थीं और मीडिया की इस विघटनकारी भूमिका के खिलाफ जगह-जगह सुनवाइयों का भी आयोजन किया था। वाराणसी में इस मसले पर प्रेस काउन्सिल द्वारा आयोजित ऐसी ही सुनवाई में, जिसकी अध्यक्षता मशहूर कवि-पत्रकार रघुवीर सहाय कर रहे थे, अपनी सेक्युलर छवि के लिए देश भर में चर्चित एक पुलिस अधिकारी ने - जिन्होंने पुलिस एवं साम्प्रदायिकता के अन्तर्सम्बन्ध पर बहुत कुछ लिखा है - इस बात का विवरण पेश किया था कि किस तरह पत्रकार खुद 'कारसेवक' की मुद्रा में आ गये थे।

> 14 अक्तूबर 2005 में पूर्वांचल का मऊनाथभंजन दंगों की चपेट में आ गया, जिसमें कई मासूमों की जान गयी। गौरतलब है कि जहां राष्ट्रीय प्रिन्ट एवं इलैक्ट्रॉनिक मीडिया ने समाजवादी पार्टी से नजदीकी रखने वाले बाहुबली विधायक मुख्तार अहमद अन्सारी को दंगा भड़काने का दोषी पाया और कर्फ्यू के दौर में खुले जीप में हथियारबन्द होकर भ्रमण करते हुए दिखाया, वहीं इस पूरे दंगे में योगी आदित्यनाथ एवं उसके सहयोगियों की भूमिका के बारे में वह

मौन ही रहा। 25-27 अक्तूबर के दरमियान सीपीआई (एमएल) से सम्बद्ध नेताओं ने इलाके का दौरा कर अपनी एक रिपोर्ट The Truth About the Mau Riots प्रकाशित की, जो दंगे के लिए जिम्मेदार तत्वों का खुलासा करती है :

''हमारी टीम को बताया गया कि जबकि दंगों की शुरुआत हिन्दू युवा वाहिनी ने की, समाजवादी एवं बहुजन समाज पार्टी के स्थानीय नेताओं ने कई स्थानों पर दंगे में शिरकत की। ...उत्तर प्रदेश में अपने आप को राजनीतिक तौर पर पुनर्जीवित करने के लिये, भाजपा पिछले कुछ समय से राज्य के विभिन्न हिस्सों में साम्प्रदायिक तनाव पैदा करने की फिराक में है। एक हद तक साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण और भाजपा में सीमित बढ़ोत्तरी दोनों को मुलायम सत्ता में बने रहने के लिए और अगले चुनावों में सत्ता में लौटने के लिये जरूरी मानते हैं। इस तरह, इस चरण में मुलायम भाजपा के पुनर्जीवन में सहायक भूमिका अदा कर रहे हैं। ...''

लेकिन प्रस्तुत निष्कर्ष तक पहुंचने के पहले वह घटनाओं का विवरण देकर बताती है कि खुद मीडिया ने भी किस तरह पक्षपाती रवैया अपनाया :

''...उपरोक्त घटनाओं से साफ है कि मऊ के दंगे योगी आदित्यनाथ के प्रतिनिधि और हिन्दू महासभा के जिला अध्यक्ष अजित सिंह चन्देल द्वारा की गयी गोलीबारी से भड़के थे। लेकिन अगले दिन के अख़बारों ने इस घटना का कोई उल्लेख तक नहीं किया, और न ही दंगों में अजित सिंह चन्देल की भूमिका की चर्चा की। उसी ढर्रे पर 'इण्डिया टुडे' (नवम्बर 2, 2005) और 'आऊटलुक' (31 अक्तूबर, 2005) जैसी राष्ट्रीय पत्रिकाओं ने मऊ दंगों पर अपनी रिपोर्टों में, दंगों को भड़काने में अजित सिंह चन्देल की केन्द्रीय भूमिका का उल्लेख नहीं किया। ...इलैक्ट्रॉनिक मीडिया भी दंगों की कवरेज में निःष्पक्ष नहीं था। 3-4 नवम्बर को मुख्तार अंसारी ने उस फूटेज की सीडी को वितरित किया जिसमें उसे खुली जीप में दंगा प्रभावित इलाकों में घूमते दिखाया गया था। कुछ चैनलों ने बिना साऊंडट्रैक के इस फूटेज का इस्तेमाल किया था। अपने बचाव में मुख्तार ने जो सीडी जारी की वह

उनके मुताबिक असम्पादित थी और साऊंडट्रैक के साथ थी। अब दंगों में अपनी भूमिका के बारे में उपरोक्त सीडी मुख्तार को दोषमुक्त करार देती है या नहीं, लेकिन मीडिया की पक्षपातपूर्ण और शरारतपूर्ण भूमिका जरूर उभरती है।...''

4

भाजपा एवं सपा : कुछ खट्टी, कुछ मीठी

समूचा पूर्वांचल बारूद के ढेर पर है। गोरखपुर की सांप्रदायिक आग पूर्वांचल के दर्जन भर जिलों में फैल चुकी है। विधानसभा चुनाव से पहले सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की नई कोशिशों के पीछे सत्तारूढ़ दल के साथ हिन्दुत्ववादी ताकतों का हाथ माना जा रहा है। पिछले कई सालों से पूर्वांचल में योगी आदित्यनाथ का दबदबा बढ़ा तो समाजवादी पार्टी का जनाधार सिमटा। खास बात यह है कि योगी ने पूर्वांचल में जाति तोड़ो का नारा देकर धार्मिक आधार पर लोगों को एकजुट करने की मुहिम चला रखी है। पूर्वांचल में हिन्दू युवा वाहिनी की एक नई फौज तैयार हो रही है। ऐसे में पूर्वांचल के सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के राजनीतिक अर्थ साफ हैं।

(जनसत्ता, 31 जनवरी 2007)

जनवरी माह के अन्त में गोरखपुर शहर ही नहीं आस-पास के कई जिले भी साम्प्रदायिक दंगों की चपेट में आये। कई दिनों तक हिंसा का दौर चलता रहा। कहने के लिए गोरखपुर स्थित डी.ए.वी. कॉलेज परिसर में शादी के दौरान किसी मामूली बात को लेकर हुई मारपीट तथा शराब के नशे में धुत युवकों द्वारा अंधाधुंध गोलियां चलाने की घटना दंगे का सबब बनी, लेकिन यह आग अगल-बगल के कई जिलों तक फैली। बताया जाता है कि गोरखपुर के जिलाधीश द्वारा दंगाइयों से सख्ती से निपटने के प्रयासों के तहत जब योगी

आदित्यनाथ और उससे सम्बन्धित दो विधायकों को हिरासत में लिया गया, तब हिंसा में अचानक तेजी आयी। बाद में राज्य प्रशासन ने गोया अपने रुख में नरमी का संकेत देते हुए न केवल जिलाधीश का तबादला किया बल्कि उन्हें तथा कई अन्य वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को निलम्बित किया और एक नयी टीम वहां भेजी। (गौरतलब है कि एक लोकप्रिय जिलाधीश के इस कदर निलम्बन को, जिसने आक्रामक हिन्दुत्व के जड़ पर प्रहार करने की कोशिश की थी, मुलायम सरकार को सप्ताह भर के अन्दर वापस लेना पड़ा तथा उन्हें इलाहाबाद का जिलाधीश बना कर भेजा गया।) नयी टीम ने पहला महत्वपूर्ण काम यही किया कि गिरफ्तार सांसद आदित्यनाथ से जाकर मुलाकात की एवं इलाके में शान्ति स्थापना पर विचार विमर्श किया।

गोरखपुर के बहाने खड़ी साम्प्रदायिक दावानल की आग एवं हिंसा का सिलसिला आस-पास के बस्ती, महाराजगंज, पडरौना आदि कई जिलों में पहुंचा, जहां कई प्रार्थनास्थल क्षतिग्रस्त किये गये, मोहर्रम के लिए रखे गये ताजियों को नुकसान पहुंचाया गया था और सम्पत्ति एवं जान-माल को भारी नुकसान पहुंचाया जा चुका था।

राज्य स्तर पर हाशिये पर पहुंची अपनी स्थिति को सुधारने के लिये भाजपा को इससे बढ़िया मौका कहां मिलता और इस मसले को लेकर उसने पूरे सूबे में माहौल गरमाना चाहा। उत्तर प्रदेश में विधानसभा के लिए आसन्न चुनावों के मद्देनज़र वोटों के ध्रुवीकरण को बढ़ावा देने के लिये भाजपा ने इस मामले को भुनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। भाजपा के नेताओं ने 'हिन्दुओं के मारे जाने को लेकर शोक प्रकट किया' और इन दंगों को मुलायम सिंह यादव की 'राजनीति और सत्ता के इस्लामीकरण का जघन्य नमूना' बताया। उनके मुताबिक 'यह सपा सरकार के जंगलराज का एक और घिनौना सबूत है।' राज्य सरकार पर 'तुष्टीकरण की नीति' अपनाने का आरोप लगाते हुए उन्होंने यह भी कहा कि 'राज्य में संविधान का शासन नहीं बचा।' पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह का यह भी कहना था कि 'हमलावर कट्टरपंथी और आतंकवादी तत्वों को हिन्दू उत्पीड़न के लिए राज्य सरकार का संरक्षण है। सपा सरकार के दबाव में पुलिस उनकी तरफदारी कर रही है।' और 'भाजपा नेताओं की गिरफ्तारियां हो रही है।' (सारे उद्धरण, जनसत्ता, 30 जनवरी 2007) जाहिर सी बात है मुलायम सरकार ने भी जुबानी पलटवार कर हिन्दुत्ववादी जमातों को खूब खरी-खोटी सुनायी।

दूर से देख रहे व्यक्ति के लिये यह प्रतीत हो सकता था कि दोनों पार्टियां आपस में किस कदर बैर-भाव रखती हैं। लेकिन बारीकी से देखें तो हक़ीकत दूसरी ही नज़र आती है।

दरअसल नूरा कुश्ती की मुद्रा में दोनों दल आपस में भले ही उलझते दिखते हों, सूबाई राजनीति में इन दो पार्टियों के आपसी रणनीतिक सम्बन्ध किसी से छिपे नहीं है।

इसी रणनीतिक रिश्ते का ही यह एक और नमूना था जब दिसम्बर माह के अन्त में भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की तीन दिन की अहम बैठक लखनऊ में आयोजित हुई, तब समाजवादी पार्टी की इसी मुलायम सरकार ने भाजपा के कई शीर्षस्थ नेताओं को राज्य के मेहमान का दर्जा देकर पांच सितारा होटलों में इनके रहने-खाने की व्यवस्था की और राज्य के खर्चे से इनके लिए गाड़ियां उपलब्ध करा दीं। एक तरफ राष्ट्रीय कार्यकारिणी में मुलायम सरकार के खिलाफ संघर्ष तेज करने के नारे लग रहे थे और दूसरी तरफ उन्हीं का आतिथ्य लेने में हिन्दुत्व के इन रणबांकुरों को गुरेज नहीं था। जाहिर सी बात है राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक के समापन के बाद आयोजित पत्रकार सम्मेलन में भाजपा द्वारा मुलायम सिंह यादव के खिलाफ संघर्ष का ऐलान किया गया तो जानकार लोग मन्द-मन्द मुस्कराते रहे।

आपसी राजदारी का एक नमूना तुरन्त सामने आया जब भाजपा ने चर्चित निठारी काण्ड पर कुछ नहीं बोला, जिसकी वजह से मुलायम सरकार की काफी फजीहत हो रही थी और उसे बचावात्मक पैंतरा अख्तियार करना पड़ा था। मालूम हो कि निठारी के इस 'खूनी कोठी' तथा आस-पास की बन्द नालियों से बाल यौन अपराधियों के अत्याचारों का शिकार बच्चों के शरीर के विभिन्न अंग निकाले गये। गोरखपुर में दंगा भड़कते ही दूसरे दिन अपने वरिष्ठ नेताओं को वहां भेजने वाला भाजपा नेतृत्व यह सुविधाजनक तरीके से भूल गया कि निठारी गांव राजधानी दिल्ली से विशेष दूरी पर नहीं है, जहां उसके तमाम नेता रहते हैं।

बहुत कम लोगों को 99 के लोकसभा चुनावों की तैयारी के दिनों की वह तस्वीर याद होगी जिसे एक अग्रणी राष्ट्रीय दैनिक ने छापा था। प्रस्तुत तस्वीर में समाजवादी पार्टी के अमर सिंह भाजपा के एक शीर्षस्थ नेता अरुण जेटली के घर से निकलते दिखे थे।

तस्वीर को लेकर छपे समाचार में भी इस बात का उल्लेख था कि इन दो पार्टियों के बीच कुछ खिचड़ी पक रही है। इसे लेकर थोड़ा बहुत हंगामा भी मचा था। निश्चित ही तब से गंगा-जमुना में बहुत पानी बह चुका है और नाजुक मौकों पर एक-दूसरे को बचाने के इन पार्टियों के उपक्रम सबके सामने हैं।

मुलायम सिंह यादव के इस बार के मुख्यमंत्री काल में इसकी कई मिसालें मिलती हैं। लोगों को याद होगा कि भाजपा के वरिष्ठ नेता लालजी टण्डन जब अपनी सालगिरह पर साड़ी बांटने के कार्यक्रम में मची भगदड़ में हुई गरीब महिलाओं की मौत के मामले में फंसते नज़र आ रहे थे, तब उन्हें उबारने का काम इसी मुलायम सरकार ने ही किया था। प्रदेश की भाजपा जब मुलायम सरकार के खिलाफ कड़े तेवर अख्तियार करने पर आमादा थी तब भाजपा के शीर्षपुरुष अटलबिहारी वाजपेयी ने मुलायम की तारीफ कर इस पूरे विरोध की हवा ही निकाल दी थी। दो साल पहले लखनऊ के राजनीतिक गलियारों में भाजपा के नेताओं द्वारा मुलायम के आवास पर समोसा खाने का किस्सा भी चर्चा में रहा था, जब वे अपने विरोध प्रदर्शन के अन्तर्गत वहां पहुंचे थे।

जाहिर है 90 के दशक के शुरुआत में 'मौलाना' मुलायम के प्रति भाजपा की जितनी खुन्नस थी वह अब दूर हो गयी है। राज्य एवं केन्द्र की सियासत में एक-दूसरे के हितों को देखते हुए एवं अपने साझा दुश्मनों को मद्देनज़र रखते हुए इन्होंने एक तरह से आपस में युद्धविराम कर रखा है, भले ही दुनिया के लिए इनकी आपसी नूरा कुश्ती चलती रहती हो।

लेकिन क्या योगी के फलने-फूलने में और (बकौल पी.यू.सी.एल.) 'मिनी नरेन्द्र मोदी' बनने में सूबे की मुख्यधारा की अन्य पार्टियां बेदाग कही जाएंगी? क्या वे इन आरोपों से बच सकती हैं कि अपने सूचक मौन से, कहीं-कहीं अपनी सहमति से भी उन्होंने साझी संस्कृति वाले इलाके के रूप में नवाजे गये क्षेत्र को उग्र हिन्दुत्व की उभरती प्रयोगशाला में तब्दील होने दिया।

निश्चित ही नहीं !

सभी जानते हैं कि गुजरात जनसंहार के दिनों में जब योगी आदित्यनाथ की उग्र हिन्दुत्व की मुहिम परवान पर चढ़ रही थी, कुशीनगर जनपद के अन्तर्गत मोहनमुण्डेरा काण्ड, गोरखपुर के पिपराइच थानान्तर्गत घटित नथुआ काण्ड या गोरखपुर शहर के पाण्डेहाता में मुसलमानों पर प्राणघातक हमलों को अंजाम दिया जा रहा था, उन दिनों सूबा उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री खुद मायावती ही थी। उन्होंने अपनी कुर्सी की खातिर इस समूचे साम्प्रदायिक खेल से अपनी आंखें मूंद ली थीं और विधानसभा चुनावों में मोदी की हिमायत कर गोया उन्होंने गुजरात में उनकी अगुवाई में लिखे गये बर्बरता एवं नफरत के इतिहास पर मुहर लगा दी थी।

तीन-तीन बार सूबे में भाजपा के साथ सत्ता की बन्दरबांट में मुब्तिला रहीं और अपने सिंहासन की खातिर बाबरी मस्जिद विध्वंस के आरोपियों के खिलाफ न्यायालय में जाने से विरत रही बहुजन समाज पार्टी इन आरोपों से बच नहीं सकती कि उन्होंने साम्प्रदायिकता के इस उभार में उनकी कोई भूमिका नहीं है!

और जहां तक कांग्रेस का सवाल है तो धर्मनिरपेक्षता के लबादे में उसके द्वारा अपनायी जाती रही नरम हिन्दुत्व की नीति भी सभी के सामने स्पष्ट है। यह कहना ज्यादा उचित होगा कि हिन्दुस्तान की सरजमीं पर संघ-भाजपा के उग्र हिन्दुत्व के फलसफे के बरअक्स नरम हिन्दुत्व का प्रयोग भारतीय राजनीति को उनकी सौगात है।

यह कोई कैसे भूल सकता है कि इन्दिरा गांधी के प्रधानमंत्रित्व काल से ही वे इस राह के यात्री बने हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की साम्प्रदायिकता विरोध की उसूली लड़ाई को कांग्रेस कब का भूल चुकी है? चाहे 1984 के सिख विरोधी जनसंहार में उनकी अग्रणी भूमिका हो या बाबरी मस्जिद के ताले खुलवा कर संघप्रणित हिन्दुत्व को उन्होंने प्रदान की वैधता हो या धर्मनिरपेक्षता के नाम पर फिलवक्त सत्ता की बागडोर थामे हुए उनके द्वारा अपनाया जाता समझौतापरस्त रुख हो, नरम हिन्दुत्व का उनके प्रयोग ने समाजी नफरत को बढ़ावा ही दिया है।

अब जहां तक योगी का सवाल है तो उन्होंने समूचे मसले को सूबे में फिलवक्त सत्तारूढ़ समाजवादी पार्टी के साथ अपने रिश्तों के चश्मे से ही देखा है। पिछले दिनों जब गोरखपुर भड़क उठा और उसकी लपटें पूर्वी उत्तर प्रदेश के इलाकों मे फैली तो केन्द्र के गृहराज्यमंत्री जायसवाल ने इसके लिए राज्य

प्रशासन को जिम्मेदार ठहराया। इसमें रेखांकित करने वाली बात यह थी कि अपने तमाम आनुषंगिक संगठनों के ताने-बाने के जरिये पूर्वी उत्तर प्रदेश को हिन्दुत्व की प्रयोगशाला बनाने में मुब्तिला योगी आदित्यनाथ पर या उनकी अतिवादी कार्रवाइयों पर कोई टिप्पणी नहीं थी। वैसे यह कोई पहला मौका नहीं था जब हिन्दू युवा वाहिनी या योगी की सरगर्मियों के बारे में वह खामोश रही। अक्तूबर 2005 में जब मऊ भड़क उठा उस वक्त भी कांग्रेस ने हिन्दू युवा वाहिनी के स्थानीय कार्यकर्ताओं की आततायी हरकतों पर मौन बनाये रखना ही मुनासिब समझा था।

> अक्तूबर 2005 में हुए मऊ के दंगों को लेकर लखनऊ तथा आस-पास के इलाके में सक्रिय सेक्युलर लोगों (लखनऊ विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति सुश्री रूपरेखा वर्मा, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी विभूतिनारायण राय, नासिर अख़्तर आदि) की पहल पर 'साझी दुनिया' ने जो रिपोर्ट जारी की उसमें बताया गया है (www.sabrang.com)। रिपोर्ट के मुताबिक :
>
> ''पूर्वांचल में जो कुछ हो रहा है, उस पर कभी-कभी चर्चा चलती रहती है, लेकिन इसका विधिवत विश्लेषण नहीं किया गया है। पिछले एक दशक से गोरक्षा पीठ के उत्तराधिकारी और भाजपा सांसद योगी आदित्यनाथ की जारी आक्रामक गतिविधियों का प्रतिबिम्ब मऊ के इन दंगों में भी दिखाई दिया है। पिछले एक दशक में योगी ने इस समूचे इलाके को, जिसे ब्रिटिशों के दिनों से गोरखपुर कहा जाता है, अपनी प्रयोगशाला बना डाला है।...
>
> योगी का सबसे अधिक प्रभाव गोरखपुर डिविजन (गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महाराजगंज) और बस्ती डिविजन (बस्ती, सन्त कबीर नगर, सिद्धार्थ नगर) के सात जिलों में है। और अब वह आज़मगढ़ डिविजन में भी अपने आधार का विस्तार कर रहे हैं। मऊ इसी डिविजन का हिस्सा है।''

बेरोजगार नौजवान, छोटे-मोटे अपराधी और पहचान के लिए संघर्षरत युवाओं से बने योगी के विभिन्न संगठनों की चर्चा करते

हुए रिपोर्ट आगे बताती है : ''उनके लिए मुसलमानों की सहभागिता वाली कोई छोटी घटना भी बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। जैसे ही उन्हें ऐसी किसी घटना की जानकारी मिल जाती है, हिन्दू युवा वाहिनी के कार्यकर्ता वहां योगी के सन्देशवाहक के तौर पर वहां पहुंचते हैं और बाद में योगी खुद पहुंचते हैं। उनकी ज्यादातर कार्रवाइयां विध्वंसक होती हैं, जिसके अन्तर्गत आग लगाने, सम्पत्ति को तबाह करने और मारपीट करने की घटनायें होती हैं। इसका सबसे चर्चित उदाहरण है मोहनमुण्डेरा।''

5

क्या आप भरत केशर सिंह को जानते हैं?

आग मुसलसल जेहन में लगी होगी !
यूं ही कोई आग में जला नहीं होगा !!

बीते 22 से 24 दिसम्बर को लखनऊ में भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी का आयोजन किया गया था। जैसा कि पहले ही चर्चा कर चुके हैं आयोजन हेतु सूबे में सत्तारूढ़ समाजवादी पार्टी का विशेष आतिथ्य भाजपा ने स्वीकारा था, जिसके अन्तर्गत मुलायम सरकार ने भाजपा के कई सारे नेताओं को राज्य का अतिथि घोषित किया था और उनके रहने के लिए पांच सितारा होटलों में इन्तज़ाम किया था तथा कारें भी उपलब्ध करा दी थीं।

प्रस्तुत आयोजन का यही वह वक्त था जब गोरखपुर में भाजपा के सांसद योगी आदित्यनाथ की पहल पर आठवें विश्व हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया गया था। पत्रकारों द्वारा यह पूछे जाने पर कि लखन ऊ में कार्यकारिणी बैठक के समानान्तर इसका आयोजन क्यों किया जा रहा है, योगी की ओर से यही कहा गया कि 'वह राजनीतिक आयोजन है और यह धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजन है।' इस तीन दिवसीय सम्मेलन में (22 से 24 दिसम्बर) संघ, भाजपा, विहिप के वरिष्ठ नेताओं, तमाम साधुओं के अलावा नेपाल से आये एक शिष्टमण्डल ने भी हिस्सा लिया था। नेपाल से आये शिष्टमण्डल की अगुवाई नेपाल के नरेश ज्ञानेन्द्र के एडीसी मेजर जनरल भरत केशर सिंह ने की थी। नेपाल से आये शिष्टमण्डल में ऐसे ही लोगों की भरमार थी जो नेपाली जनता के अत्याचारों का प्रतीक बनी राजशाही के समर्थक थे

और जो इस बात पर सियापा कर रहे थे कि दुनिया के इस एकमात्र हिन्दू राष्ट्र को किस तरह 'सेक्युलर मुल्क' बना दिया गया।

वैसे एक तरह से देखें तो प्रस्तुत सम्मेलन की तैयारी के नाम पर जिस कदर गोरखपुर एवं आस-पास के तमाम इलाकों को केसरिया रंग में रंग दिया गया, जिस किस्म के भड़काऊ भाषण सम्मेलन के दौरान दिये गये और जिस तरह मीडिया ही नहीं बल्कि शहर के हिन्दुओं के एक हिस्से ने योगी के इस आयोजन को सफल बनाने में मेहनत की, उसी वक्त इस बात का पूर्वाभास हो चुका था कि आने वाले समय में कुछ गम्भीर होने वाला है। निश्चित ही इसकी भविष्यवाणी नहीं की जा सकती थी कि सब कुछ इतनी जल्दी सामने आएगा।

किसी बाहरी व्यक्ति के लिए जनवरी माह में हुए मामूली झगड़े के साम्प्रदायिक दंगे में हुए रूपान्तरण से आश्चर्य हो सकता है ! लेकिन गोरक्षपीठ के इर्द-गिर्द योगी एवं उनके कारिन्दों की गतिविधियों से वाकिफ लोग इसे उसकी तार्किक परिणति मानेंगे। फौरी तौर पर देखें तो साम्प्रदायिक तनाव का माहौल तभी बनना शुरू हुआ था, जब दिसम्बर माह के उत्तरार्द्ध में विश्व हिन्दू महासम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें बांग्लादेश, नेपाल आदि पड़ोस के मुल्कों से भी लोग पहुंचे थे।

विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक सिंघल, विश्व हिन्दू महासंघ के अध्यक्ष मेजर जनरल भरत केशर सिंह, पुरी के शंकराचार्य निश्चलानन्द, जगदगुरु माधवाचार्य श्री विशेष तीर्थ (उडुपी), जगदगुरु रामानन्दाचार्य वासुदेवाचार्य और जनता पार्टी के अध्यक्ष सुब्रह्मण्यम स्वामी, विनायक दामोदर सावरकर की पुत्रवधू आदि लोगों की दिसम्बर माह के उत्तरार्द्ध में गोरखपुर में उपस्थिति और विराट हिन्दू महासम्मेलन (22-24 दिसम्बर 2006) के मंच पर खड़े होकर दिये गये उद्‌बोधन निश्चित ही किसी भी शहर और इलाके की अमन चैन को खतरे में डालने के लिए काफी थे।

यूं तो औपचारिक तौर पर यही कहा गया था कि इस सम्मेलन का आयोजन 'हिन्दू धर्म के समक्ष खड़ी चुनौतियों' के सन्दर्भ में किया गया था, लेकिन न इसमें दलितों के साथ तेजतर होते जा रहे भेदभाव पर चर्चा हुई, न हिन्दू धर्म के रखवालों से यही कहा गया कि वे स्त्री की दोयम दर्जे की स्थिति को दूर करें। सम्मेलन के आयोजन के केन्द्र में रहे गोरखपुर के भाजपा सांसद योगी आदित्यनाथ, जो वहां स्थित नाथ सम्प्रदाय के गोरक्षा पीठ के महन्त भी

हैं, को देखते हुए यह साफ ही था कि यहां धार्मिक शब्दावली में राजनीतिक कार्यक्रम तय किया जाएगा ताकि राजनीतिक हिन्दुत्व को आगे बढ़ाया जा सके।

न केवल इस महासम्मेलन में नेपाल में हिन्दू राज्य की स्थापना एवं राजशाही को बहाल करने की मांग की गयी, बल्कि साथ ही साथ अयोध्या में भव्य मन्दिर निर्माण और काशी और मथुरा के प्रार्थनास्थलों को 'मुक्त करने' और गोहत्या बन्दी पर पाबन्दी लगाने पर भी जोर दिया गया। एक अख़बार के मुताबिक :

> 'विश्व हिन्दू महासम्मेलन के दूसरे दिन आज आयोजित धर्मसभा एवं सन्त सम्मेलन में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर मांग की गयी कि नेपाल को पूर्ववत संवैधानिक हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाय। यह भी प्रस्ताव पारित किया गया कि हिन्दुओं के आस्था केन्द्र काशी में विश्वनाथ मन्दिर, मथुरा में श्रीकृष्ण मंदिर और अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के पुनर्निर्माण का अधिकार हिन्दुओं को सौंपा जाये।...' 'गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध नहीं लगा तो पुनः आन्दोलन' की चेतावनी भी दी गयी।
>
> *(आज, गोरखपुर 24 दिसम्बर 2006)*

गौरतलब है कि जहां मीडिया की आंखें राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक या भाजपा में नेतृत्व को लेकर चल रहे घमासान पर ही केन्द्रित रही, वहीं साम्प्रदायिक तौर पर अधिकाधिक संवेदनशील होते पूर्वी उत्तर प्रदेश में हो रहे इस आयोजन की चर्चा करना भी ज्यादातर ने जरूरी नहीं समझा।

एक तरह से देखें तो जहां भाजपा की कार्यकारिणी अपने विशिष्ट एजेंडे - राममन्दिर के निर्माण को लेकर - जहां शुरुआत में बगलें झांकती नज़र आयी, वहीं इस 'बाग़ी' कहे गये सांसद के तत्वावधान में हो रहे इस आयोजन में शुरुआत से ही उन्हीं एजेंडों पर जोर था। यह जुदा बात है कि बैठक के अन्त में पार्टी को अचानक अपने पारम्पारिक मुद्दे की याद आयी और वहां आयोजित आम सभा में राममन्दिर के निर्माण एवं उग्र हिन्दुत्व के रास्ते की ओर लौटने का संकल्प दोहराया गया।

अब जहां तक गोरखपुर में आयोजित प्रस्तुत विश्व हिन्दू सम्मेलन का सवाल है, यह बात रेखांकित करने वाली है कि सम्मेलन को कामयाब बनाने

के लिए क्षेत्रीय मीडिया ने भी अपनी तरफ से पूरी कोशिश की थी, यहां तक कि इसके प्रति विरोध प्रकट करने वाली सेक्युलर आवाज़ों को खामोश रखने में भी वह सक्रिय रहा था। जानकारों के मुताबिक हिन्दी मीडिया के बहुमत का समर्पण इस हद तक था कि उन्होंने सम्मेलन के दौरान समूचे आयोजन से असहमति रखने वाले समाचारों को जगह तक नहीं दी।

एक राष्ट्रीय अख़बार के, जिसकी राज्य में सत्तासीन पार्टी से नज़दीकियां जगजाहिर हैं, उसने सम्मेलन के तीनों दिन निकाले गये परिशिष्ट को गेरुए रंग में रंगने में भी संकोच नहीं बरता। महासम्मेलन के रंग में रंगी स्थानीय मीडिया ने लोगों को यह सूचना देना भी जरूरी नहीं समझा था कि गोरक्षा पीठ की जो जमीनें नेपाल में हैं, उन पर भी अब लगाम कसने की तैयारियां चल रही हैं।

नवलपरासी की छावनी और गोरक्षनाथ मठ

भारत-नेपाल की सीमा के करीब नेपाल स्थित नवलपरासी जिले में गोरक्षनाथ मठ की मिल्कियत में 46 एकड़ जमीन है। महंत अवैद्यनाथ के पहले गोरक्षनाथ पीठ के प्रमुख महंत रहे दिग्विजयनाथ के वक्त़ में ईश्वर राज खण्डेल नामक जमींदार ने ये जमीन मठ को दी थी। यहां पर मठ की ओर से मन्दिर बना हुआ है और मठ के गेरुआधारी नुमाइन्दे रहते भी हैं।

विश्व हिन्दू महासंघ के सम्मेलन के दौरान ही ख़बर आयी थी कि माओवादियों के एक दल ने जाकर वहां दो सौ क्विंटल लेवी की मांग की थी। बताया जाता है कि ख़बर मिलने के बाद योगी के प्रतिनिधियों ने नेपाली कांग्रेस के नेता एवं सांसद देवेन्द्रराज खण्डेल, जो पूर्व गृहराज्यमंत्री रह चुके हैं, से इस सिलसिले में बात की थी, ताकि इसे देने से बचा जा सके। बाद में गोरक्षनाथ मठ से गेरुआधारियों की एक टीम भी नेपाल भेजी गयी।

यह भी जानी हुई बात है कि गोरक्षनाथ मठ के नाम नेपाल में कई अन्य स्थानों पर भी जमीनें हैं। अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि राजशाही के जमाने में जिस किस्म की छूट परजीविता के दर्शन पर कायम इन मठों को मिलती होगी, उसमें अब कटौती होने को है।

जानकारों के मुताबिक यह प्रश्न अब अधिक विचारणीय हो उठा है कि क्या नेपाल को हिन्दू राष्ट्र बनाने के प्रति योगी एवं उनके मुरीदों की अतिसक्रियता कहीं अपने इन ठोस निजी 'भौतिक कारणों से तो संचालित नहीं हो रही थी, जिस पर आध्यात्मिकता का मुलम्मा चढ़ाया जा रहा है।

वैसे यह पहला मौका नहीं था जब गोरखपुर शहर में योगी की अगुवाई में विश्व हिन्दू सम्मेलन का आयोजन हुआ था। 13 से 15 फरवरी 2003 को यहां सातवें विश्व हिन्दू महासम्मेलन के दौरान भी उसी किस्म के भड़काऊ भाषण हुए थे और पूरे इलाके को उसी तरह भगवामय किया गया था। उपरोक्त सम्मेलन की 'उपलब्धियों' की चर्चा करते हुए 'आउटलुक, हिन्दी साप्ताहिक, के 24 फरवरी 2003 के अंक में 'योगी भाजपा के लिए खतरा?' शीर्षक योगेश मिश्र की रिपोर्ट में बताया गया था कि : '.... इस महासम्मेलन की 'अतिरंजित' शैली के कारण इलाके में सांप्रदायिक सौहार्द के ताने-बाने पर गहरा असर हुआ है। वैसे भी, विभिन्न कारणों से चर्चित रहे योगी आदित्यनाथ के अधिकांश आक्रामक अभियानों का स्वर मुस्लिम विरोधी रहा है और इस महासम्मेलन को उसका विस्तार भर माना जा सकता है।..' 'इंडिया टुडे' के 23 फरवरी 2003 के अंक में प्रस्तुत सम्मेलन की तैयारी का विवरण देते हुए बताया गया था कि 'पिछले 8 महीनों में आस-पास के जिलों में विराट हिन्दू संगमों के भीड़ भरे आयोजन कर उन्होंने गांव-गांव तक हिन्दू महासभा का सांगठनिक ढांचा खड़ा किया है।' योगी की 'आक्रामक शैली' के कसीदे पढ़ते हुए यह भी बताया गया था कि 'राजनीति का हिन्दूकरण करो - हिन्दुओं का सैनिकीकरण करो' जैसे नारों ने उन्हें युवा वर्ग का नायक बना दिया है।' उपरोक्त रिपोर्ट में भी योगी की शैली के चलते कई बार पूर्वांचल में पैदा हुई सांप्रदायिक तनाव की स्थिति का भी उल्लेख किया गया है। अपनी बीमारी के बावजूद संघ के भूतपूर्व सुप्रीमो रज्जूभैया से लेकर अशोक सिंघल सब ने इसमें हाजिरी लगायी थी। सम्मेलन की सफलता से अशोक सिंघल इतना गद्‌गद् थे कि उन्होंने योगी को 'हिन्दुत्व की नई तरुणाई का प्रतीक' घोषित कर दिया था।

अब जहां तक दिसम्बर माह में सम्पन्न आठवें विश्व हिन्दू महासम्मेलन का सवाल था, तो उसमें सातवें सम्मेलन की तुलना में एक नया आयाम जोड़ा गया था। इसके अन्तर्गत सम्मेलन के दूसरे दिन सन्तों एवं वंचितों की रैली के

नाम पर योगी से सम्बधित संगठनों ने दलित जातियों के साथ जुलूस निकाला था। जानने योग्य है कि जहां इस रैली के फोटो दूसरे दिन के अख़बार में भी छपे थे, वहां साथ-साथ इस रैली से जुड़ी एक महत्वपूर्ण ख़बर को विशेष स्थान नहीं मिल सका। दरअसल विश्व हिन्दू महासम्मेलन के लिए आये सन्तों ने इस रैली में जाने से साफ-साफ इन्कार किया था। इसके पीछे उनकी मनुवादी मानसिकता काम कर रही थी या नहीं, यह तो अलग पड़ताल का विषय है।

योगी द्वारा आयोजित सातवां विश्व हिन्दू महासम्मेलन जहां वर्ष 2002 में अंजाम दिये गये गुजरात जनसंहार की पृष्ठभूमि में, राज्य एवं केन्द्र में सत्तासीन मित्रवत सरकारों की छत्रछाया में एवं नेपाल में राजशाही के बने रहने के दौरान हुआ था, वहीं आठवें विश्व हिन्दू महासम्मेलन के वक्त आयी तब्दीलियां सबके सामने थीं। इस दौरान जहां भाजपा के अगुवाई वाला गठबन्धन केन्द्र से बेदखल हुआ है और एक व्यापक जनविद्रोह के बाद 'हिन्दू राष्ट्र' के तौर पर संचालित नेपाल को न केवल धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र का दर्जा दिया गया बल्कि नेपाल की राजशाही भी अपनी अन्तिम सांसें गिन रही हैं।

साफ है आठवें सम्मेलन में नेपाल के हिन्दू राष्ट्र को बहाल करने को लेकर खूब भाषणबाजी भी चली। वहां से राजशाही समर्थक सहभागियों का दल भी आया था। नेपाल के शिष्टमण्डल के अग्रणी - ज्ञानेन्द्र के एडीसी मेजर जनरल भरत केशर सिंह, जो विश्व हिन्दू महासंघ के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष भी हैं - सम्मेलन के एक प्रमुख वक्ता थे। (योगी आदित्यनाथ विश्व हिन्दू महासंघ की भारत शाखा के अध्यक्ष हैं।) वैसे सम्मेलन में शामिल बाकी लोग शायद ही जानते होंगे कि लम्बे समय तक ज्ञानेन्द्र के वफादार रहे भरत केशर सिंह - जिन्होंने अपने भाषण में भी नेपाल में हुए जनविद्रोह को किसी की साजिश बताया को नेपाल की सड़कों पर पिछले दिनों आम जनता के कोपभाजन का शिकार होना पड़ा था। (जानकारों को बता दें कि अप्रैल के जनविद्रोह का चर्चित नारा था 'ज्ञानेन्द्र चोर, गद्दी छोड़')

20 जून 2006 को काठमाण्डू की सड़क पर इन्हें और इनके दो लड़कों अजय केशर और अनन्त केशर को आम लोगों की भीड़ ने बुरी तरह पीटा और उनकी टोयोटा कोरोला कार, रजिस्ट्रेशन नम्बर बीए 1 सीएचए 6689 आग के हवाले कर दी। (Kantipur online, www.kantipuronline.com, June 21) दरअसल हुआ यूं था कि भरत केशर सिंह की गाड़ी ने राह चलते एक मोटर साइकिल सवार को धक्का मारा और उसके द्वारा विरोध करने पर

उसी की पिटाई कर दी। लैनचौर इलाके में हुई इस घटना के दौरान देखते-ही-देखते भारी भीड़ वहां एकत्रित हो गयी और उसने राजशाही के दिनों के उनके कारनामों से परिचित भरत केशर सिंह एवं उनके शहजादों को बुरी तरह पीटा तथा बाद में उन्हें पुलिस के हवाले किया।

इलाके के पुलिस इन्स्पेक्टर आभूषण तिमिलसिना बाकायदा हथकड़ी डाल कर भरत केशर सिंह को थाने ले गये, वहां किसी तरह भरत केशर सिंह और उसके लड़कों को जमानत मिल पायी थी। दूसरे दिन नेपाल के सभी अख़बारों के पहले पन्नों पर हथकड़ी डाले भरत केशर सिंह की तस्वीर थी, जिसमें अपने चेहरे पर की झेंप मिटाने की कोशिश करते वह दिखे थे। आभूषण तिमिलसिना की तारीफ करते कई अख़बारों ने सम्पादकीय भी लिखे थे।

कहा जाता है तस्वीर बोलती है। वह अदद तस्वीर भी नेपाल के नये बदलाव का एक और सूचक थी, नीला यूनिफॉर्म पहने चश्मा लगाये आभूषण तिमिलसिना और उनके पीछे मामूली अपराधी की तरह खड़े भरत केशर सिंह-विश्व हिन्दू महासंघ के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष।

6

हिन्दू राष्ट्र पर हरी टहनी

अप्रैल 2006 में जब नेपाल में राजशाही के खात्मे और एक संवैधानिक गणतंत्र की मांग को लेकर उठा जनविद्रोह अपने चरमोत्कर्ष पर था, उन दिनों एक जुलूस में शामिल तमाम लोगों को 'हरी टहनी' लेकर चलते हुए देख कर एक भारतीय पत्रकार ने यह जानना चाहा था कि आखिर इसका क्या अर्थ है? लोगों ने बताया कि जब हम किसी की मौत पर उसके अन्तिम संस्कार में शामिल होने जाते हैं, तो साथ में 'हरी टहनी' लेकर चलते हैं।

आज लगभग एक साल होने को है जब नेपाल की घृणित राजशाही ही नहीं बल्कि उसके द्वारा कायम हिन्दू राष्ट्र पर 'हरी टहनी' डाल दी गयी है। माओवादी एवं अन्य जनतांत्रिक ताकतों के संगठित प्रयासों से जो विद्रोह मुमकिन हुआ था, उसने हिन्दू राष्ट्र को अतीत की चीज़ बना डाला है और नेपाल को एक धर्मनिरपेक्ष मुल्क घोषित किया है। और जल्द ही इस बात का भी फैसला हो जाएगा कि जनता के खिलाफ किये तमाम अपराधों के लिए ज्ञानेन्द्र एवं उसके परिवारजनों एवं अन्य कारिन्दों के साथ क्या सलूक किया जाए? लेकिन यह अभी भी नहीं कहा जा सकता कि महल ने और दोनों ओर रहने वाले हिन्दू राष्ट्र के हिमायतियों ने अभी पूरी तरह हार मान ली है।

नेपाल के तराई इलाके में अपनी उपेक्षा के खिलाफ मधेशियों द्वारा जो आन्दोलन चलाया जा रहा है, उसके बारे में भी यह बात कही जा रही है कि राजा को बचाने के लिए तराई में उपद्रव को हवा देने में भारत के हिन्दू अतिवादी भी किस तरह सक्रिय हैं। 29 जनवरी 2007 के 'द टेलिग्राफ' में लिखे अपने आलेख में प्रख्यात पत्रकार भारत भूषण बताते हैं : "...बताया

जाता है कि नागपुर से आये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उच्च स्तरीय प्रतिनिधि ने गोरखपुर में तमाम राजशाही समर्थकों के साथ बातचीत की। इस सन्दर्भ में स्थानीय भारतीय सांसद महंत द्वारा निभायी गयी भूमिका पर भी उंगली उठ रही है।'

वैसे यह विचारणीय मसला है कि ज्ञानेन्द्र दुनिया के एकमात्र जिस हिन्दू राष्ट्र के सर्वेसर्वा बने थे, ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में राजकाज सम्भाल रहे थे, उस हिन्दू राष्ट्र की क्या खासियतें थीं? यह जानना इसलिये जरूरी है कि नफरत की राजनीति पर टिका संघ परिवार या योगी आदित्यनाथ जैसे उसके करीबी हमेशा ही नेपाल के हिन्दू राष्ट्र बने रहने की हिमायत करते रहे हैं और हमेशा उससे प्रेरणा लेने की बात करते रहे हैं। उन्हें इस बात से कोई गुरेज नहीं रहा है कि इस हिन्दू राष्ट्र में किस तरह लोकतंत्र का गला बार-बार घोटा जाता रहा है या किस तरह अपने सगे बड़े भाई राजा वीरेन्द्र एवं उनके समूचे खानदान के रहस्यमय हत्याकाण्ड में सहभागिता के आरोपों से राजा ज्ञानेन्द्र अभी पूरी तरह मुक्त नहीं हुए हैं।

लेकिन सबसे अहम बात यह है कि वहां 'हिन्दू राष्ट्र' के नाम पर मुट्ठीभर पुरोहित समुदाय, राजशाही और उनके करीबी भूस्वामियों-पूंजीशाहों के हाथों में समाज एवं सत्ता की बागडोर रहती आयी है।

प्रस्तुत हिन्दू राष्ट्र में राजशाही को इतने विशेषाधिकार दिये गये थे कि संविधान के मुताबिक ''राजा या उसके आत्मीयों द्वारा की गई किसी भी कार्रवाई के बारे में किसी भी अदालत में कोई प्रश्न नहीं उठा सकता था।'' राजा की आय और उनकी व्यक्तिगत सम्पत्ति किसी भी तरह के कर से मुक्त थी और उसे कोई खरीद-बेच नहीं सकता था।

हिन्दू राष्ट्र का वजूद वहां के गरीबों पर कई तरह से कहर बन कर टूटता था। दुनिया के सबसे गरीब मुल्कों में शुमार यह मुल्क दूसरे देशों के लिए, उनकी सेनाओं के लिए अपने नागरिकों का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता था। हजारों की संख्या में नेपाल की स्त्रियां भारत ही नहीं दक्षिण एशिया के चकलाघरों में आज भी सड़ रही हैं। दस साल पहले के आकलन के मुताबिक नेपाल की दो लाख महिलायें केवल भारत के वेश्यालयों में अपना देह बेचने के काम में धकेल दी गयी हैं। इस हिन्दू राष्ट्र में वहां आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक ढांचे पर सवर्ण जातियों, खासतौर से ब्राह्मण और क्षत्रिय का वर्चस्व रहा है।

वर्ष 1963 तक नेपाल में हिन्दू न्यायविधान आधिकारिक तौर पर लागू

थे। नेपाल की आबादी में 22 फीसदी हिस्सा दलित इस संस्था के सबसे अधिक शिकार थे। सदियों से नेपाल के दलित मन्दिरों के बाहर रहते आये थे, गांव के कुओं से पानी निकालने से वंचित किये गये थे और अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने के लिए उनके नामों को बदलने के लिए भी मजबूर होते रहे थे। 90 के दशक में नेपाल की संसद में जनप्रतिनिधि बन कर चुन कर आये एक दलित प्रतिनिधि ने बताया था कि किस तरह वह आज भी गांव के मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात कि अब इतिहास की चीज़ बन चुके नेपाल के हिन्दू राष्ट्र में धर्मांतरण एक अपराध घोषित किया गया था और जहां राष्ट्रीय पशु घोषित की गयी गाय को मारने की सज़ा अठारह साल कैदे बामशक्कत थी और जहां हुकूमत ने वहां मौजूद विभिन्न नृजातीय एवं धार्मिक समुदायों पर 'सनातन धर्म' की अपनी अवधारणा थोपी थी।

1990 में जब एक व्यापक जनान्दोलन के बाद नेपाल ने एक नया संविधान अपनाया, तब संविधान समिति पर इस बात के लिए भारी दबाव पड़ा कि नेपाल को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया जाये। इसके चलते संविधान समिति के अन्दर भी विभाजन की नौबत आयी थी। अलबत्ता अन्त में हिन्दू प्रतिष्ठान का दृष्टिकोण हावी रहा था और नेपाल के 'हिन्दू राष्ट्र' का स्वरूप बरकरार रखा गया था।

7

भयल गति सांप-छछुंदर जैसी

अर्थात योगी के लिए भाजपा या भाजपा के लिए योगी

वर्ष 2004 में लोकसभा के लिए सम्पन्न चुनावों में जिन इलाकों में भाजपा की दुर्गति होने से बची उनमें पूर्वी उत्तर प्रदेश का गोरखपुर भी शामिल था। यहां से गोरक्षनाथ पीठ के 34 वर्षीय महंत योगी आदित्यनाथ तीसरी बार संसद के लिये चुने गये। गौरतलब है कि इसके पहले चार बार महंत अवैद्यनाथ यहां से जीतते आये थे।

क्या इसका अर्थ होगा भाजपा का अपना सांगठनिक ढांचा बहुत मजबूत है, जिसकी वजह से यह जीत मुमकिन हो सकी। इसका साफ जवाब नकारात्मक ही होगा।

इन चुनावों के कुछ समय पहले भाजपा में 'घरवापसी' के बाद कल्याण सिंह और राजनाथ सिंह सरीखे पार्टी के सीनियर नेताओं की एक आम सभा इसी गोरखपुर में रखी गयी थी। यह सभा 'फ्लॉप शो' साबित हुई थी। वजह? योगी आदित्यनाथ ने इस सभा से अपने आप को दूर रखा था। औपचारिक तौर पर योगी की ओर से यही कहा गया कि परिचितों में किसी की अस्वस्थता के चलते उन्हें दिल्ली यात्रा करनी पड़ी, लेकिन असल मकसद अपनी ताकत दिखाने का था कि उनकी मर्जी के बगैर भाजपा की कोई हैसियत नहीं है।

जानने योग्य है कि भाजपा के इस आधिकारिक सांसद ने बीते विधानसभा चुनावों में गोरखपुर से खड़े भाजपा के आधिकारिक प्रत्याशी शिवप्रताप शुक्ल के

खिलाफ हिन्दू महासभा के बैनर तले 'अपने' प्रत्याशी को जितवा दिया था। पूर्वमंत्री शिवप्रताप शुक्ला को मुंह की खानी पड़ी थी वहीं योगी के प्रत्याशी हिन्दू महासभा के डॉ. राधामोहन दास अग्रवाल जीत गये थे। बताया जाता है कि आस-पास के पिपराइच और मुंडेरवा में खड़े योगी के उम्मीदवारों के चलते ही भाजपा के प्रत्याशियों की दुर्गति हुई थी। इन विधानसभा चुनावों में अपने भाषणों में योगी ने इतना भी कहा था कि भाजपा दोगली पार्टी हो गयी है और जनता को इस दोगली पार्टी का विरोध करना चाहिये।

लेकिन योगी आदित्यनाथ द्वारा पूरे क्षेत्र में समानान्तर संगठन खड़ा किये जाने के बावजूद 'अनुशासन का दम्भ' भरने वाली भाजपा द्वारा इस बाग़ी सांसद को निकालना तो दूर रहा, उसे अभी तक एक अदद नोटिस भी जारी नहीं किया है। इतना ही नहीं उल्टे योगी को संघ परिवार एवं भाजपा के शीर्ष नेताओं का वरदहस्त प्राप्त है। वर्ष 2003 फरवरी की बात है इसी गोरखपुर में योगी की छत्रछाया में विश्व हिन्दू महासंघ के सातवें महासम्मेलन का आयोजन हुआ था तब उसके लिये संघ परिवार के तमाम अग्रणी नेता पहुंच गये थे। यहां तक कि बीमारी के बावजूद रज्जूभैया भी पहुंचे थे। सम्मेलन की सफलता से गद्‌गद् होकर विहिप के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक सिंघल ने योगी को 'हिन्दुत्व की तरुणाई का प्रतीक' तक घोषित कर दिया था।

भाजपा को 'दोगली पार्टी' घोषित करने वाले, यहां तक कि उसके प्रत्याशियों को ऐलानिया हराने वाले व्यक्ति के सामने भाजपा का शीर्ष नेतृत्व किस कदर नतमस्तक था उसका प्रमाण जुलाई 2003 में सामने आया। इस माह में गोरक्षनाथ पीठ पर आयोजित एक कार्यक्रम में तत्कालीन उपप्रधानमंत्री और भाजपा के अग्रणी नेता लालकृष्ण आडवाणी खुद पहुंचे थे। जाहिर सी बात है आडवाणी को बुलवाकर योगी ने प्रदेश के भाजपा नेताओं को अपने दरबार में हाजिरी लगवाने के लिये भी मजबूर किया था।

आखिर क्या वजह है कि एक 'बाग़ी सांसद' जिसने इलाके में पार्टी की जड़ खोदने में कोई कसर नहीं छोड़ी है और आज भी डंके की चोट पर उसमें संलग्न है, उसे भाजपा ने किस लिये अपने सर पर बिठा रखा है और क्यों संघ परिवार भी उसका मुरीद बना हुआ है। अपने अनुशासन के हो-हल्ले का तार-तार होता देख कर भी आडवाणी-वाजपेयी से लगायत स्थानीय नेताओं ने मौन धारण करना ही बेहतर समझा है। निश्चित तौर पर इसकी कई वजहें दिखती हैं।

वजह साफ है कि योगी आदित्यनाथ उसी एजेंडे को आगे बढ़ा रहे हैं जिसके लिये पिछले कई दशकों से संघ-भाजपा यत्न करते रहे हैं और अगर संघ की तुलना में देखें तो ज्यादा 'कारगर' ढंग से आगे बढ़ा रहे हैं। सभी जानते हैं कि योगी आदित्यनाथ अपनी 'उन्मादी' एवं 'उत्तेजनापूर्ण' शैली के लिए मशहूर हैं और उसी करामात का नतीजा है कि आज की तारीख में गोरखपुर शहर (जो साम्प्रदायिक सद्भावपूर्ण सम्बन्धों के लिये जाना जाता है, जहां 1947 के बंटवारे के समय यहां तक कि 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद भी दंगा नहीं हुआ था) और आस-पास के सात-आठ जिले एक ऐसे इलाके में रूपांतरित हो गये हैं जो सरकारी भाषा में 'साम्प्रदायिकता के हिसाब से संवेदनशील' हैं। संघ-भाजपा अपने पचास साल की गतिविधियों से जो नहीं कर पायीं उसे योगी की सरगर्मियों ने कुछ सालों में कर दिखाया है।

संघ-भाजपा वाले अच्छी तरह जानते हैं कि योगी की महत्वाकांक्षायें बड़ी हैं और वह पूर्वी उत्तर प्रदेश का बाल ठाकरे या मोदी बनना उसका लक्ष्य है। 'आऊटलुक' साप्ताहिक ने 24 फरवरी 2003 के अपने अंक में (योगी भाजपा के लिये खतरा? योगेश मिश्रा) साफ-साफ लिखा था कि 'गुजरात और गोरखपुर नाम में प्रथमाक्षरों की समानता ही नहीं है, बल्कि गौर से देखा जाए तो दोनों में एक से अधिक समानतायें दिखने लगी हैं। अगर कट्टरपंथी राजनीति के घोड़े पर सवार गुजरात में हिन्दुत्व के उभार ने मतपत्रों पर अपनी मौजूदगी दिखाई तो उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र के गोरखपुर में यह उभार कुलाचें मारने को तैयार दिखता है। अगर वहां मोदी हैं तो यहां उभार के नायक 'योगी' हैं।'

संघ के लिए अपना एजेंडा कितना महत्वपूर्ण रहता है और अपने ही आनुषंगिक संगठनों के स्वास्थ्य की कितनी चिन्ता रहती है, यह बार-बार सामने आता रहता है। 1984 के चुनावों में भाजपा की हुई दुर्गति और उसके महज दो सांसदों का लोकसभा में पहुंचना अब अतीत की चीज बन गया हो, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि इन चुनावों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भाजपा को नहीं बल्कि कांग्रेस को समर्थन दिया था। इन्दिरा गांधी की मौत के बाद कांग्रेसी नेताओं की शह पर जिस तरह सिखों के क़त्लेआम का आयोजन किया गया था, उसमें संघ को यह साफ हुआ था कि किसी तरह खड़े होने की कोशिश में लगी भाजपा नहीं बल्कि कांग्रेस हिन्दुत्व के एजेंडे को आगे बढ़ा सकती है।

कुछ विश्लेषकों के मुताबिक संघ परिवार के अपने आनुषंगिक संगठनों के साथ जिस तरह श्रम विभाजन के रिश्ते हैं उसी तरह के रिश्ते संघ परिवार एवं योगी आदित्यनाथ और उनके तमाम संगठनों के बीच हैं। भाकपा माले (लिबरेशन) जैसों का तो मानना है कि ''..कुछ लोगों को यह भ्रम हुआ हो कि योगी के क्रिया कलाप संघ से स्वतंत्र हैं, लेकिन योगी परिघटना संघ सम्प्रदाय के श्रम विभाजन को ही अभिव्यक्त करती है। योगी विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं ..पिछले साल 4 दिसम्बर को संघ सरसंचालक के. सी. सुदर्शन अयोध्या आन्दोलन को लेकर गोरखनाथ मंदिर में हुई एक बैठक में शरीक हुए।...'' (हाल की घटनायें और संघ की मुहिम, भाकपा माले, लिबरेशन, उत्तर प्रदेश कमेटी, 2003)

8

पूर्वांचल, हिन्दुस्तान का सबसे उपेक्षित और सबसे सघन आबादी वाला इलाका।

शाब्दिक अर्थों में पूर्वांचल का नेपाल से सटा इलाका, आज़ादी से पहले और आज़ादी के बाद भी, अधिक हाशिये पर रहा है। ब्रिटिश कालखण्ड में इस इलाके के हजारों लोगों को समुद्र पार वेस्टइंडीज, दक्षिणी पैसिफिक, मॉरिशस और कई अन्य स्थानों पर गन्ने के बागानों पर श्रमिक के तौर पर भेजा गया था। आज की तारीख में इसी इलाके से बड़े पैमाने पर युवा लोग बम्बई और कोलकाता पहुंचते हैं।

पूर्वी उत्तर प्रदेश की गरीबी बढ़ती ही जाती है भले ही संसद में सीटों के मामले में वह बेहतर हालत में हो, सूबा उत्तर प्रदेश की कुल 80 सीटों में से 33 सीटें यहीं से हैं। यह जुदा बात है कि मजबूत राष्ट्रीय नेता पश्चिमी उत्तर प्रदेश से ही ताल्लुक रखते हैं।

हर साल गोरखपुर और देवरिया जिलों में ही सैकड़ों बच्चे मच्छरों द्वारा फैलाये जाते एन्सिफलायटिस से मर जाते हैं। इस समस्या से निपटने की कोई आपात योजना नहीं दिखती, भले ही हर कोई जानता है कि यह सिलसिला नियमित चलता है। वर्ष 2005 में मीडिया ने तब तक ध्यान नहीं दिया जब तक मरने वाले बच्चों की संख्या एक हजार को पार नहीं कर गई।

देश के मुसलमानों की साक्षरता दर को देखें तो उत्तर प्रदेश की दर सबसे न्यूनतम है, जिसके अन्तर्गत महज 35 फीसदी को थोड़ी बहुत शिक्षा मिलती है, जिनमें से 8 फीसदी मिडल स्कूल पूरा कर पाते हैं तो महज 2.9 फीसदी हाईस्कूल पूरा कर पाते है।

पूर्वांचल के बड़े शहरों में शुमार किये जा सकने वाले गोरखपुर में पिछले

कुछ सालों से आर्थिक गतिविधियां स्थूल रूप से तीन चीजों के इर्द-गिर्द ही केन्द्रित हो चली हैं। कृषिगत सामानों के व्यापार के अलावा, नेपाल आने-जाने वाले पर्यटकों के चलते थोड़ा बहुत पर्यटन उद्योग और गोरक्षनाथ पीठ की लोकप्रियता के चलते उसके इर्द-गिर्द आयोजित मेलों से होने वाली आमदनी। फर्टिलायज़र कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया की फैक्टरी तथा इलाके की चीनी मिलों के बड़े हिस्से के बन्द होने तथा रेलवे वर्कशॉप्स के भी बन्द होते जाने से भी क्षेत्रीय युवाओं की बेरोजगारी में बेतहाशा बढ़ोत्तरी देखी जा सकती है।

एक तरफ अयोध्या से सटे और दूसरी तरफ नेपाल की सीमा को छूते इस इलाके में ऐतिहासिक पिछड़ेपन और आधुनिक पूंजीवादी विकास में पीछे छूटते जाने की स्थिति ने ऐसी ताकतों के लिए माकूल जमीन तैयार की है, जो लोगों के गुस्से को सही दिशा दे सके। यह जुदा बात है कि पूंजीवादी राजनीतिक दलों की निष्क्रियता या चुनावी राजनीति की उठापटक में उनके कार्यकलापों के अधिकाधिक सिमटते जाने और वामपंथी आन्दोलन के कमजोर होने के चलते पैदा शून्य ने योगी आदित्यनाथ के आक्रामक हिन्दुत्व का रास्ता प्रशस्त किया है। इसी के चलते हम उस विडम्बनापूर्ण स्थिति से रू-ब-रू हैं कि सूबा उत्तर प्रदेश में 'पितृ-पार्टी' भाजपा की दुर्गति रुकने का नाम नहीं ले रही है और उधर योगी आदित्यनाथ का सिक्का बुलन्दियों पर है।

अगर उनकी गतिविधियों को देखें तो पता चलेगा कि आदित्यनाथ ने उस शून्य को भरने की कोशिश की है जो इलाके में पूंजीवादी राजनीतिक दलों की निष्क्रियता या वामपंथी आन्दोलन के कमजोर होने के चलते पैदा हुआ है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि वह 'मासवर्क' (जनता के बीच काम) की नब्ज पहचानते हैं और स्वयं को दूर की पारी खेलने के लिये तैयार कर रहे हैं। 90 के दशक में दलितों-पिछड़ों की सत्ता पर बढ़ती दावेदारी के चलते संघ-भाजपा ने 'अखिल हिन्दू एकता' के अपने प्रयासों को कमजोर होते देखा है, विशेषकर उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के उद्भव ने तो उसकी काफी दुर्गति की है। एक सवर्णों की पार्टी के तौर पर उसकी छवि लोगों में घर कर गयी है। भाजपा के इस कदर सवर्ण पार्टी में हुए 'रूपांतरण' के बरअक्स योगी ने हिन्दुत्व के अपने एजेंडे के तहत जाति आधारित राजनीति की काट का 'मॉडल' पेश किया है, आक्रामक हिन्दुत्व के साथ दलितों को भी जोड़ने की कवायद की है वह संघ-भाजपा के लिये एक 'नज़ीर' बन रहा है।

बारीकी से देखें तो दलितों-वंचितों को जोड़ने का काम कई तरीकों से किया गया है। इसका एक तरीका जाति तोड़ो मुहिम का है। मिसाल के तौर पर पूर्वांचल में ही देवीपाटन के महंत कौशलेन्द्रनाथ गांव-गांव जाकर छोटी व दलित जाति के लोगों से भी एक मुट्ठी अनाज मांगते हैं। वे सभी के साथ बैठ कर भोजन करते हैं और हिन्दुओं को भाईचारे का सन्देश देते हैं। बस्ती, संत कबीर नगर, महाराजगंज जैसे इलाकों में उनका यह कार्यक्रम कुछ समय से चल रहा है। गौरतलब है कि देवीपाटन पीठ के प्रमुख महंत योगी आदित्यनाथ ही हैं।

दलितों-पिछड़ों को अपने साथ जोड़ने में योगी की 'कामयाबी' इस बात में भी उजागर होती है कि विश्व हिन्दू सम्मेलन के दूसरे दिन सन्तों और वंचितों की रैली के नाम पर पूरे शहर में एक रैली निकाली गयी थी, जिसमें मुसहर तथा अन्य गरीब जातियों के लोग शामिल हुए थे।

इसका दूसरा तरीका ऐसे तबकों की आर्थिक मांगों को उठाने का भी है या उनके लिए सुविधायें मांगने का भी है या उन्हें किसी संगठन के बैनर तले एकजुट करने का भी रहा है। पिछले चन्द सालों में योगी ने अपने इर्द-गिर्द संगठनों का भी एक ताना-बाना विकसित किया है। जानकारों के मुताबिक पिछले दो साल में योगी की अगुवाई में हिन्दू जागरण मंच, हिन्दू युवा वाहिनी और विभिन्न प्रकोष्ठों वाले गोरक्षनाथ पूर्वांचल विकास मंच जैसे अनेक संगठन खड़े हो चुके हैं। ये सभी संगठन हिन्दुत्व के एजेंडे के लिए काम करते हैं। मसलन पटरी पर बैठने वाले लोगों को 'राम प्रकोष्ठ' के तहत एकत्रित किया गया है तो बांस का काम करने वाले लोगों को 'बांसफोड़ हिन्दू मंच' के बैनर तले संगठित किया गया है। हिन्दू युवा वाहिनी की सांस्कृतिक शाखा ने जो पहला नाटक पेश किया था वह 'धर्मांतरण' पर केन्द्रित था।

इसके अलावा भी केसरिया सेना, केसरिया वाहिनी, कृष्णा सेना जैसे संगठन हैं तो भले ही प्रत्यक्षतः योगी के आनुषंगिक संगठनों के दायरे में नहीं आते हों, अपने आप को 'योगी सेवक' कहलाते हैं।

-राजनीतिक शून्य के कारण योगी का 'लड़ाकूपन' भी समाज के एक तबके को आकर्षित करता है जिसमें वह जनप्रिय मांगें भी उठाते है। रिक्शा वालों को जगह दी जाय, अवैध कब्जा वालों को रोजगार के वैकल्पिक साधन मुहैया कराये जायें। यह अकारण नहीं था कि सातवें तथा आठवें विश्व हिन्दू महासम्मेलन में छोटे दुकानदार/पटरी वाले/गरीब तबके के लोग ज्यादा शामिल थे।

अपनी सियासी गतिविधियों के लिए योगी ने गाय जैसे हिन्दुत्व की राजनीति के पुराने प्रतीक का जम कर इस्तेमाल किया है। गोवंश की रक्षा एवं संवर्धन पर उनका विशेष जोर रहता है। गायों को बांटने से लेकर, गोशाला बनवाने तक वह सक्रिय रहते हैं। कहीं गाय/बैल के मरने की ख़बर आयी तो तुरन्त पहुंच कर माहौल को गरमाना उनके कार्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा है। जनवरी 2004 की बात है जब ट्रक से कुचल कर पांच-छह गायें मरीं तो उसी बात को लेकर उसने शहर भी बन्द करवाया। गोरक्षा के नाम पर प्रशासन पर दबाव बनाने का आलम यह था कि उन दिनों लक्ष्मीपुर, महाराजगंज में सांड को पीटने के आरोप में एक व्यक्ति पर गैंगस्टर एक्ट लगा कर उसे बन्द कर दिया गया था।

योगी के तमाम कदम एक सधे हुए राजनीतिज्ञ की तरह दूर की पारी खेलने की गरज से उठते दिखते हैं। बीती लोकसभा के दिनों में उन्होंने गोसंरक्षण विधेयक संसद में पेश किया था। जाहिर है कि पूर्वांचल के एक नगर से अपनी सियासत को संचालित करने वाला यह शख्स देश के पैमाने पर भी हिन्दुत्व के अलम्बरदारों को सन्देश देना चाहता है।

यह बात भी महत्वपूर्ण है कि एक पुराने समाजवादी के रूप में योगी को अपनी 'उग्र' राजनीति के लिए एक 'उदार' चेहरा भी मिला हुआ है। आदित्यनाथ जहां 'उग्र' हिन्दुत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं तो हिन्दू महासभा के विधायक के रूप में योगी का वरदहस्त पाये डॉ. राधामोहनदास अग्रवाल उसकी सियासत का 'मॉडरेट' चेहरा हैं। गोरखपुर जैसे छोटे शहर में बच्चों के चर्चित डॉक्टर अग्रवाल की खासियत यह है कि वह सहज उपलब्ध रहते हैं। अपनी क्लीनिक पर आज भी नियमित बैठते हैं। यहां तक कि किसी के बुलावे पर खुद ही गाड़ी लेकर पहुंच जाते हैं। किसी मोहल्ले की नालियां बन रही हों तो, वह औचक निरीक्षण करने के लिए भी हाजिर हो जाते हैं। (वैसे ताज़ा समाचार यह है कि योगी की कार्यशैली से विधायक महोदय नाराज बताये जाते हैं तथा दोनों के बीच अब संवाद न्यूनतम स्थिति तक पहुंच गया है।)

योगी आदित्यनाथ तथा उनकी मण्डली की मीडिया नीति भी गौर करने लायक है। छोटे शहर में ज्यादातर पत्रकारों के साथ उनके अच्छे ताल्लुकात हैं। ये लोग नियमित प्रेस सम्मेलन कर अपनी 'सक्रियताओं' के बारे में लोगों को अवगत कराते रहते हैं। कई बार यह होता है कि 250 रुपये देकर दिनभर में अपने आनुषंगिक संगठनों की ओर से दस-दस पत्रकार सम्मेलन करते हैं।

ख़बरों का जिस तरह स्थानीयकरण हुआ है उसके चलते ये तमाम रिपोर्टें छप भी जाती हैं और समूचे शहर तथा आस-पास के इलाके में ऐसा माहौल बन जाता है कि वही लोग सब कुछ कर रहे हैं।

निश्चित तौर पर महज इतने से ही 'उग्र हिन्दुत्व' की छवि का निर्माण नहीं हो सकता न 'हिन्दू राष्ट्र' के उस प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाया जा सकता है जिसके लिये योगी को विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय सेक्रेटरी जनाब अशोक सिंघल ने 'हिन्दू युवा हृदय सम्राट' के तौर पर सम्बोधित किया है।

9

दलित चेतना पर हिन्दुत्व की धार

पड़ोसी से झगड़ा न करने पर हिन्दू युवा वाहिनी कार्यकर्ताओं ने पीटा *(हिन्दुस्तान, 5 अक्तूबर 2003)*

...नौतनवां, महाराजगंज, चन्दनपुर के कडजहिया टोला निवासी दलित रामभरत का आरोप कि मुसलमान पड़ोसी के साथ झगड़ा न करने पर हिन्दू युवा वाहिनी के कार्यकर्ताओं ने एक व्यक्ति को उकसाकर उनसे झगड़ा करवाया और उन्हें मारा-पीटा गया।...

'हिन्दू राष्ट्र' के इस प्रोजेक्ट की विशिष्टता है मुसलमानों को निरन्तर निशाने पर रखना एवं उनके खिलाफ दलित पिछड़ों को जोड़ने के लिये छोटे बड़े विवाद में दखल देकर उसे 'साम्प्रदायिक रंग' देने की कोशिश करना। इसमें कोई दो-राय नहीं कि अपनी सरगर्मियों ने गोरखपुर, देवरिया, सिद्धार्थनगर से लेकर बहराईच तक 'मुस्लिम विरोधी जनोन्माद' भड़काने में योगी को सफलता भी मिली है। इस मामले में गोरखपुर अंचल की भौगोलिक स्थितियां भी उसके लिये मुफीद रही हैं। यह अंचल एक तरफ अयोध्या से लगा हुआ है, दूसरे इसकी सीमायें नेपाल से लगी हैं। संघ परिवार की ही तर्ज पर नेपाल बॉर्डर पर आई.एस.आई. के अड्डे, उनके ट्रेनिंग कैम्प का हव्वा योगी की तरफ से भी होता रहता है। आए दिन 'शहर में मदरसों के जरिये आई.एस.आई. की गतिविधियों का बढ़ना' या 'नेपाल के माओवादियों के साथ आई.एस.आई. के ताल्लुकात' आदि तमाम बेबुनियाद बातों को लेकर भी उसका प्रचार चलता रहता है।

गोधरा के नाम पर गुजरात में जब हिन्दुत्व ब्रिगेड की ओर से अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया गया था तब यही देखने में आया था कि अचानक उसी के समानान्तर योगी की आक्रामक गतिविधियों में भी इजाफा हुआ था। उन्हीं दिनों यहां नारे भी लगे थे कि 'इसे गोधरा और गुजरात बना देंगे।' योगी का दाहिना हाथ समझे जाने वाले हिन्दू महासभा के नेता दीपक अग्रवाल ने गोधरा काण्ड के विरोध में बंद के समय टाउन हाल पर दिये भाषण में कहा था, 'योगी जी के चरण की इज़ाज़त मिले तो एक के बदले सौ को लागू करेंगे।' स्थानीय विधायक डॉ. राधामोहन दास अग्रवाल का दिया भाषण अख़बार में भी छपा था, ''गोरखपुर हिन्दू राष्ट्र है और इसके प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति दोनों योगी आदित्यनाथ हैं।'' उसके बाद गुजरात के समानान्तर गोरखपुर तथा आस-पास के क्षेत्रों में भी अल्पसंख्यकों को आतंकित करने, मकानों को गिरवाने तथा पूरे समुदाय को उत्पीड़ित करने की तमाम घटनायें सामने आयी थीं।

लेकिन गैरभाजपा पार्टियों की अपनी निष्क्रियता या सुस्ती का आलम यह था कि किसी ने भी इस मसले पर इन तत्वों को घेरने की कोशिश नहीं की थी। सभी पार्टियां अपनी रस्मअदायगी करके चुप्पी साध गयी थीं। उन्हीं दिनों पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज की सूबाई इकाई तथा 'इन्साफ' नामक संगठन ने 'यू.पी. अब गुजरात की राह पर' शीर्षक से जारी अपनी जांच रपट के ज़रिये योगी के 'मिनी नरेन्द्र मोदी' बनने के कई कारनामों के बारे में देश के सेक्युलर लोगों को अवगत कराया था। मोहन मुण्डेरा काण्ड, नथुआ काण्ड और तुर्कमानपुर की घटना की जांच करा कर पेश की गयी इस रिपोर्ट के जरिये राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को यह ज्ञापन भी दिया गया था (5 जुलाई 2002) कि ''..शुद्ध जघन्य आपराधिक कुकृत्य को किस प्रकार महंत योगी आदित्यनाथ साम्प्रदायिक झगड़े का रूप देते हैं और पुलिस व प्रशासन योगी के आक्रामक रुख के समक्ष सुरक्षात्मक रहने की नीति अपनाता है जिसका परिणाम है - मुस्लिमों में भारी भय और आतंक का माहौल पैदा होना।'' ज्ञापन में लिखा गया था कि ''कुशीनगर जनपद अन्तर्गत 19 जून 2002 को मोहनमुण्डेरा गांव का दुर्भाग्यपूर्ण काण्ड, 23 जून को घटित गोरखपुर के ही पिपराइच थानान्तर्गत घटित नथुआ काण्ड या 25 जून 2002 को गोरखपुर शहर के पाण्डेहाता में मुस्लिमों पर हुए प्राणघातक हमले यह सब एक श्रृंखला की कड़ी हैं।

मालूम हो कि मोहनमुण्डेरा काण्ड में एक अति पिछड़ी जाति की युवती के साथ गांव के एक असामाजिक व्यक्ति द्वारा जो मुसलमान था, बलात्कार की घटना को बहाना बना कर पूरे मुस्लिम बस्ती पर हजारों लोगों की भीड़ ने हमला किया था तथा उनके घरों को जलाया गया था जिसमें इन्हीं हिन्दुत्ववादी अतिवादियों का हाथ था। रिपोर्ट के मुताबिक, 'मोहनमुण्डेरा में मुस्लिमों को तबाह करने के बाद गोरखपुर जनपद के पिपराइच थाना क्षेत्र के नथुआ गांव में एक हिन्दू दलित युवती के साथ छेड़छाड़ के मामले में हुई चाकूबाजी की घटना को आधार बना कर तीन मुस्लिम घरों में आगजनी की गयी। यहां सभा की गई। भीड़ इकट्ठा हुई और उसे ललकार कर घटना अंजाम दे दी गयी।.. हालांकि इस मामले में पीड़ित मुस्लिमों की तरफ से हिन्दू महासभा के प्रत्याशी और योगी के गुण्डे दीपक अग्रवाल के खिलाफ मुकदमा कायम किया गया।..'

दलितों-पिछड़ों को मुसलमानों से लड़ाने का यह सिलसिला 2002 में रुका नहीं। बाद के दिनों में भी कई छोटी बड़ी घटनायें हुई हैं जिसमें यह दिखता है कि किस तरह योगी आदित्यनाथ मुसलमानों के खिलाफ 'अखिल हिन्दू एकता' बढ़ाने में लगे हैं। गौरतलब है कि मोहनमुण्डेरा आदि काण्डों में योगी की संलिप्तता को लेकर जब माहौल गरमाने लगा तथा उसकी गिरफ्तारी की मांग की गयी तब 4 अगस्त 2002 को योगी ने आडवाणी को '...बहुसंख्यक समाज के विरुद्ध सम्प्रदाय विशेष के अराजक तत्वों द्वारा किये जा रहे उत्पीड़न तथा राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में अचानक हुई वृद्धि' के बारे में पत्र लिख कर एक तरह से साथ-साथ चेतावनी दी थी कि अगर इन पर ध्यान नहीं दिया जाएगा तो 'कानून व्यवस्था के लिए तो समस्या पैदा होगी।...''

नवम्बर 2003 में भटनी थाना क्षेत्र के थवई टोला घाटी गांव में शनिवार की रात (3 नवम्बर 2003) को मारपीट की घटना में एक युवक (मुकेश शर्मा-जाति लोहार) की मौत हुई। गांव में तीन घर लोहारों के थे, दो दलित परिवार थे और 80 परिवार मुस्लिम थे जो ठीक-ठाक आर्थिक हालत वाले थे। पुलिस में रिपोर्ट हुई। गांव के ही कुछ शोहदे इसके लिये जिम्मेदार थे, जो इत्तेफाक से मुस्लिम परिवार के थे। अख़बार की रपट के मुताबिक रविवार 'अपराह्न एक बजे कुछ हिन्दूवादी संगठनों के लोग वहां पहुंचे। इसके बाद धीरे-धीरे आस-पास के गांव से भारी संख्या में लोग पहुंचे। एका-एक भीड़ ने हल्ला करते हुए अल्पसंख्यकों की बस्ती पर हमला कर उन्हें मारना-पीटना तथा उनके मकानों में आग लगाना शुरू किया।' जानने योग्य है कि गांव में

फायरब्रिगेड के रास्ते में सरपत रखा गया था। एक दूसरे अख़बार ने लिखा 'सुनियोजित साजिश के तहत लगायी गयी आग' ..'घटना पूरी तरह सुनियोजित साजिश का हिस्सा लगती है। आग लगाने वाले घाटी बाज़ार से मिट्टी का तेल, डीज़ल और पेट्रोल लेकर गये थे और एक योजनाबद्ध तरीके से अल्पसंख्यकों की बस्ती के चारों कोने से आग लगायी।.... आग लगाने वाले लोग पुलिस के पहुंचने के पहले मोटरसाईकिलों से भागते देखे गये।' 6 नवम्बर को पुलिस अधीक्षक के हवाले से ख़बर दी गयी कि भटनी के थानाध्यक्ष एवं घाटी चौकी पुलिस की लापरवाही से थवई टोला में आगजनी की घटना हुई।

10 नवम्बर को पूर्व सांसद आस मोहम्मद ने गोरखपुर में प्रेस सम्मेलन कर साफ-साफ कहा कि 'पूर्वांचल में योगी आदित्यनाथ एक समस्या बन चुके हैं। वह समानान्तर न्याय व्यवस्था चला रहे हैं। उन्होंने अपनी न्याय व्यवस्था का नाम 'सहज स्वाभाविक प्रतिक्रिया' रखा है।

10

योगी परिघटना का एक कम चर्चित पहलू हिन्दुत्व की spatial strategies से भी जुड़ा है।

अगर हम विगत दो-ढाई दशकों में हिन्दुत्व ब्रिगेड की 'सफलताओं' का विश्लेषण करना चाहें तो अन्य तमाम कारकों की चर्चा करते हुए एक अहम बात अक्सर छूटती हुई दिखाई देती है। और वह है इस परियोजना/प्रोजेक्ट के कर्णधारों द्वारा (एक समाजविज्ञानी की जुबान में कहें तो) अपनायी गयी हिन्दुत्व की spatial strategies, जिसने इसके विस्तार में अहम योगदान दिया है। मिसाल के तौर पर अयोध्या स्थित बाबरी मस्जिद के इर्द-गिर्द केन्द्रित स्थान/जगह आधारित रणनीति हो या पिछले एक दशक से अधिक समय से चर्चित बाबा बुढनगिरी दरगाह पर उसके द्वारा ठोंका गया दावा हो या अपने एजेंडा के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न धार्मिक यात्राओं या समागमों का उसके द्वारा किया जाने वाला इस्तेमाल हो, इसने लोगों के जनमानस में इसकी जगह बनाने के काम को सुगम किया है। और 'एक राष्ट्र, एक संस्कृति और एक जन' के अपने समरूपीकरण एवं वर्चस्व कायम करने के हिन्दू राष्ट्र के एजेंडे की स्वीकार्यता बढ़ायी है।

आखिर इस रणनीति के मूलभूत तत्व किस तरह चिन्हित किये जा सकते हैं? 'स्थान/इलाका/मार्ग' केन्द्रित प्रस्तुत रणनीति की 'कामयाबी' दो बातों पर निर्भर होती है। एक, वह विशिष्ट स्थान/इलाका आदि कोई खास किस्म का हो और दूसरे, उसमें 'अन्य' भी किसी न किसी तरह शामिल हो।

90 के दशक की शुरुआत में हिन्दुत्व के अतिवादियों के हाथों विध्वंस कर दी गयी बाबरी मस्जिद का प्रसंग हो, जिसके अन्तर्गत चार सौ साल पुरानी मस्जिद तबाह कर दी गयी और जिसके चलते आज़ादी के बाद हुए सबसे बड़े

पैमाने पर साम्प्रदायिक दंगों का मसला हो या समय-समय पर कृष्णजन्मभूमि (मथुरा) या ज्ञानवापी मस्जिद (काशी विश्वनाथ मन्दिर - वाराणसी) जैसे 'पवित्र स्थानों' की मुक्ति की बात हो (90 के दशक का हिन्दुत्व ब्रिगेड का चर्चित नारा था 'तीन नहीं अब तीस हजार, बचेगी नहीं एक मजार') उसने 'सेक्युलर' आवरण के अन्तर्गत भी 'स्थान आधारित हस्तक्षेप' को आगे बढ़ाया है। उदाहरण हुबली स्थित ईदगाह मैदान में तिरंगा फहराने को लेकर खड़े किये विवाद को इसी श्रेणी में डाला जा सकता है।

स्थान आधारित दूसरे तरह का हस्तक्षेप साझी संस्कृति के प्रतीक स्थलों को समरूपीकरण के अपने एजेंडे में समाहित करने में भी दिख सकता है। ऐसे स्थानों के साझे स्वरूप को नष्ट कर, उसका हिन्दुत्वकरण करने की उसकी कोशिशें किसी न किसी रूप में चलती रहती हैं। 19वीं सदी के महान सूफी सन्त साईं बाबा का जिस तरह हिन्दूकरण किया गया, वह अपने आप में एक रोचक इतिहास है। आज की तारीख़ में कर्नाटक के बाबा बुढनगिरी दरगाह को दत्त मन्दिर घोषित करने का मसला ज़ेरे बहस है। हालांकि कई स्थानों पर हिन्दूकरण की उसकी कोशिशें कामयाब हुई हैं, अलबत्ता कई ऐसे स्थान हैं जिसमें विभिन्न समुदायों के आम जनों की एकता को तोड़ पाना उसके लिए मुमकिन नहीं हुआ है।

'स्थान आधारित' हस्तक्षेप का तीसरा तरीका ऐसे मन्दिरों, मठों के क्रमशः ब्राह्मणीकरण/हिन्दुत्वकरण में भी नज़र आता है जो ब्राह्मणी जकड़न से बाहर रहते आये हैं और उनका उद्गम ब्राह्मणवाद के खिलाफ मध्ययुग में उठे निम्न तबकों के विद्रोह में दिख सकता है। महान बसवा द्वारा स्थापित वीरशैव आन्दोलन जिसने जाति प्रथा को तगड़ी चुनौती दी थी, उसका जिस तरह हिन्दुत्वकरण किया जा रहा है या श्रीनारायण गुरु के नेतृत्व में एसएनडीपी योगम के ज़रिये 19वीं सदी में जो सांस्कृतिक बग़ावत की गयी, उसे जिस तरीके से हिन्दुत्व की परियोजना में शामिल करने की कोशिशें हो रही हैं, वह सबके सामने है। नाथ सम्प्रदाय के एक हिस्से का हिन्दुत्वकरण करने में, उसे हिन्दुत्व की परियोजना में समाहित करने में इनकी सफलता भी स्पष्ट है।

भारतीय सन्त परम्परा के महान सन्त गोरखनाथ और उनका नाथपंथ जो न मूर्तिपूजक था और जिसने निरन्तर वर्णव्यवस्था और सनातनी कर्मकाण्ड का विरोध किया उनके अग्रणी पीठों में गिने जाने वाले गोरक्षनाथ पीठ ने एक वक्त में ब्राह्मणवाद के मूल्यों-मान्यताओं की जबरदस्त मुखालिफत करके देश

के निम्न तबकों के दिलों में अपने लिए स्थान बना लिया था।

अगर इतिहास में झांक कर देखें तो धर्म तथा राजनीति का जो घोल पूरे देश में जम कर प्रचारित-प्रसारित हुआ उसके शुरुआती प्रयोगों की सफलता भी इस इलाके में देखने को मिलती है। मसलन गोरक्षनाथ पीठ की जो आजादी के पहले तक एक छोटे से परिसर में स्थित था तथा मुख्यतः धार्मिक गतिविधियों में संलग्न था उसने आजादी के बाद क्षेत्र में शैक्षिक तथा रचनात्मक कामों को चलाने के लिये संस्थाओं का गठन किया, लेकिन इस मामले में सक्रिय महंत दिग्विजयनाथ की महत्वाकांक्षायें महज यहीं तक सीमित नहीं थी। मठ के विस्तार में इनके द्वारा अपनाये गये तौर-तरीकों से वे कई बार विवादों के घेरे में रहे। वे हिन्दू महासभा के बैनर तले चुनाव भी लड़ते थे और सांसद भी बने थे। आज की तारीख में गोरक्षनाथ मंदिर के पास अथाह जमीनें हैं।

दिग्विजयनाथ के बाद अवैद्यनाथ ने महंत की गद्दी सम्भाली और नाथ सम्प्रदायों के लिए सबसे अहम यह मंदिर 'राम मन्दिर आन्दोलन' से जोड़ दिया गया। भारतीय सन्त परम्परा के महान सन्त गोरखनाथ और उनका नाथपंथ वर्णव्यवस्था और सनातनी कर्मकाण्ड का विरोधी था, नाथसम्प्रदाय मूर्तिपूजक भी नहीं रहा है लेकिन आज उसी का पीठ राम मन्दिर के लिए चल रहे आन्दोलन से घनिष्ठ रूप से जुड़ा है और वर्तमान समय में पूर्वी उत्तर प्रदेश को हिन्दुत्व की प्रयोगशाला बनाने की मुहिम के केन्द्र में है।

क्या कोई सोच सकता था कि गोरक्षनाथ पीठ के उत्तराधिकारी मनुवाद के एजेंडे को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हिन्दुत्व के नये वाहक बनेंगे?

11

यह बात कम आश्चर्यजनक नहीं है कि 'योगी परिघटना' जो हिन्दुत्व के शस्त्रागार में एक महत्वपूर्ण वृद्धि है और जिसने नफरत पर आधारित उसके एजेंडे को 'सृजनात्मक' ढंग से आगे बढ़ाया है, उसकी ओर बहुत कम लोगों का ध्यान गया है। छिट-पुट अख़बारी लेखों या नागरिक अधिकार संगठनों की रिपोर्टों को छोड़ दें तो हिन्दुत्व के इस अलग किस्म के प्रयोग की गम्भीर विवेचना आज तक नहीं हो सकी है। दरअसल अगर संघ-भाजपा को हिन्दुत्व का पहला मॉडल/रास्ता कहा जा सकता है, शिवसेना द्वारा अन्य पिछड़ी जातियों को साथ जोड़ कर महाराष्ट्र में बढ़ाये गये प्रयोग को हिन्दुत्व का दूसरा मॉडल/रास्ता कायम किया गया है तो योगी परिघटना को हिन्दुत्व की सियासत का तीसरा मॉडल/रास्ता अवश्य कहा जा सकता है।

यह सबके सामने है कि संघ-भाजपा द्वारा प्रणित हिन्दुत्व का पहला मॉडल जहां ठहराव का शिकार होता दिखा है, उसी वक्त पूर्वी उत्तर प्रदेश में योगी द्वारा छेड़े प्रयोग ने हिन्दुत्व की परियोजना के गतिरोध को तोड़ा है। जैसा कि हम पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं, इस परिघटना की खासियतें सबके सामने हैं, न केवल दलितों-पिछड़ों के एक हिस्से को अपनी ओर करने में, मुसलमानों के खिलाफ आक्रामक हिंसा में उनका इस्तेमाल करने में और गोरक्षनाथ जैसे पीठ के हिन्दुत्वकरण/ब्राह्मणीकरण करने में उसको कामयाबी मिली है।

लेकिन योगी परिघटना की 'कामयाबी' हिन्दुत्व ब्रिगेड के कारिन्दों के लिए खासकर अनुशासन का दम्भ भरने वाली भाजपा के लिए कम खतरे की घण्टी नहीं है। दरअसल भाजपा को अब यह तय करना है कि वह उसकी पार्टी के सांसद कहे गये योगी के सामने पूरी तरह समर्पण कर देगी और पूर्वी उत्तर प्रदेश को उसके हवाले कर देगी या उनकी गतिविधियों को सांगठनिक

अनुशासन में बांधने की कोशिश करेगी। पिछले दिनों मेयर के पद के लिए हुए चुनावों से लेकर स्थानीय निकायों के चुनावों में योगी ने भाजपा को इस बात का एहसास करा दिया था।

गोरखपुर के आस-पास कई स्थानों पर हुए स्थानीय निकायों के चुनावों में जहां योगी हिन्दू युवा वाहिनी के अपने कार्यकर्ताओं को भाजपा का टिकट दिलवाने में सफल हुए, वहीं जिन स्थानों पर भाजपा ने उनकी बात नहीं मानी वहां पर अपने सांस्कृतिक कहे गये संगठन 'हिन्दू युवा वाहिनी' के नाम से उन्होंने प्रत्याशियों को खड़ा करने में संकोच नहीं किया। आज की तारीख में गोरखपुर-बस्ती मण्डल में वाहिनी के बैनर तले 11-12 सदस्य जीते हैं। कई स्थानों पर हिन्दू युवा वाहिनी एवं भाजपा दोनों के प्रत्याशी खड़े होने से अन्य दलों का फायदा भी हुआ। लेकिन भाजपा की सबसे अधिक फजीहत गोरखपुर के मेयर पद के चुनावों में नज़र आयी थी, जहां वह अपने प्रत्याशी को खड़ा करना चाह रही थी लेकिन योगी ने समाजवादी पार्टी से भाजपा में आयी प्रत्याशी पर अपना वरदहस्त रखा। भाजपा नेतृत्व ने जब आना-कानी करने की कोशिश की तब योगी ने विधानसभा चुनाव के रास्ते चलने की धमकी दी, तब भाजपा को खुद झुकना पड़ा।

साफ है मीडिया में बयानबाजी के जरिये भाजपा भले ही योगी की हितैषी दिखने की कोशिश करती रही हो, लेकिन असली हकीकत यही है कि योगी को लेकर भाजपा की 'भयल गति सांप छछुंदर जैसी' दुर्गति हुई है। भाजपा के सामने खड़ी यह दुविधा योगी की गिरफ्तारी के बाद भी साफ नज़र आयी थी, जब उसने अपने आप को चन्द औपचारिक कार्रवाइयों तक सीमित रखा था।

यह तो आने वाला समय बताएगा कि योगी एवं भाजपा के आपसी अन्तर्सम्बन्ध किस ओर बढ़ेंगे।

लेकिन इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि योगी के उभार ने समूचे इलाके में सदियों से दोनों समुदायों में कायम सद्भाव को नाजुक मुकाम पर ला खड़ा किया है।

गोरखपुर वह इलाका है जहां पास के मगहर में भक्ति आन्दोलन के महान सन्त कबीर ने अपनी अन्तिम सांस ली थी, वही कबीर जो हिन्दू-मुसलमानों की एकता के पक्षधर थे।

गोरखपुर वह शहर है जो महान सूफी सन्त रौशन अली शाह एवं बाबा गोरखनाथ की कर्मभूमि रहा है। बताया जाता है कि 18वीं सदी में किसी दिन

जब अवध के नवाब असफउद्दौला गोरखपुर के पास के जंगलों से गुजर रहे थे, उनकी मुलाकात सूफी सन्त रौशन अली शाह से हुई। नवाब ने जब उनके लिए कुछ करने की इच्छा जाहिर की, तब सूफी सन्त ने उन्हें बताया कि वह वहां इमामबाड़ा बना दे लेकिन गोरक्षनाथ पीठ के लिए भी जमीन एवं जायदाद दे दे। जानकारों के मुताबिक आज भी अधिकतर गोरखपुर शहर इमामबाड़ा या गोरखनाथ पीठ की मिल्कियत के अन्तर्गत ही आता है।

गोरखपुर वही शहर है जहां स्वतंत्रता संग्राम में अपनी शहादत से नया इतिहास रचने वाले रामप्रसाद बिस्मिल को फांसी दी गयी थी, वही बिस्मिल जिन्होंने अशफाकउल्ला खान को इसमें शामिल कर बर्तानवी हुक्मरानों के सामने एक नयी मिसाल पेश की थी।

पूर्वी उत्तर प्रदेश की हाल की घटनाओं ने ख़तरे की घण्टी बजा दी है, जहां इस बात को देखा जा सकता है कि हिन्दुओं का एक हिस्सा भी, साझी शहादत एवं साझी विरासत के अपने इतिहास से बेख़बर, योगी के आक्रामक हिन्दुत्व का मुरीद बन रहा है। हम देख रहे हैं कि पूर्वी उत्तर प्रदेश जिसने ब्रिटिशों के खिलाफ 1857 के संग्राम से लेकर आज़ादी के आन्दोलन तक जुल्म एवं ज्यादतियों के खिलाफ हमेशा प्रतिरोध की आवाज़ को बुलन्द किया है, आज खुद आपसी नफरत को बढ़ावा देने वाली ताकतों का अनुगामिनी बना है।

निश्चित ही अतीत की साझेपन की विरासत हमारी धरोहर है, लेकिन महज हम उनका गुणगान करते हुए इस खराब़ वक्त़ के गुजर जाने का इन्तज़ार नहीं कर सकते। 21वीं सदी की इन पैड़ियों पर हमारे सामने खड़ी इन चुनौतियों से हमें जूझना है और उसके लिये नये समाधान ढूंढने हैं। लेकिन सबसे पहले हमें सच्चाई जैसी है उसे ठीक से समझना है और इस पहेली को बूझना है कि आखिर हम अब तक इतना गाफिल क्यों रहे? आखिर क्यों यह इन्सानद्रोही फलसफा एक सामाजिक सहज बोध (social common sense) के तौर पर समाज के एक हिस्से को अपनी ओर आकर्षित कर सका है।

अब वक्त़ आ गया है कि हम इस विचित्र स्थिति का खुद सामना करें जहां हमारा साबिका ऐसे छोटे फासिस्टों से है जो साथ-साथ लोकप्रिय भी हैं। अब वक्त़ आ गया है कि हम फासीवाद की अपनी पुरानी समझदारी को नये सन्दर्भ में परखें और जानें कि किस तरह एक योगी खुद फासिस्ट बन सकता है और किस तरह आम लोग धर्मयुद्धों के नये संस्करण के लिये हुंकार भर सकते हैं।

परिशिष्ट 1

'मैं मुसलमानों के वोट चाहता हूं, लेकिन पहले उन्हें गंगाजल में धुल दीजिए'

इण्डियन एक्सप्रेस के पत्रकार वर्गीज के. जार्ज ने गोरखपुर में जारी योगी के चुनाव अभियान पर एक स्टोरी की थी, जिसमें उसने योगी की चुनाव सभा तथा मुलाकात का विवरण पेश किया था :
गोरखपुर, अप्रैल 20 : घड़ियां तो आम लोगों के लिए होती हैं। रात के दस बजे से अधिक हो चले हैं। यह वह समय सीमा है जो चुनाव आयोग ने सभाओं के आयोजन के लिए तय की है, जिसका पालन लालकृष्ण आडवाणी को भी करना पड़ता है। लेकिन वहां जमा भीड़ को अपने प्रमुख वक्ता का अभी भी इन्तज़ार है।

इस दौरान छुटभैये लोग श्रोता समूह को व्यस्त रखे हुए हैं। बाज़ारों में चलने वाली गप-शप को तथ्य के तौर पर पेश किया जा रहा है। ''सोनिया गांधी हिन्दुस्तान की स्थायी नागरिक नहीं है।,'' एक वक्ता कहता है, ''वह हर पांच साल पर अपनी नागरिकता का नूतनीकरण करती है।'

लेकिन अभी और बहुत कुछ बाकी है : आखिर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय आतंकवादियों को किस तरह पैदा करता है और किस तरह अकबर ने हमारी बहनों को अपमानित किया।

लेकिन चिन्ता की बात नहीं। मुक्तिदाता आ गया है। योगी आदित्यनाथ, भाजपा का 32 साल का सांसद जो गोरखपुर से जीतना चाह रहा है, टाटा सफारी में पहुंचता है और जिसके पीछे 25 से अधिक कारों का काफिला है।

हवा में 'जय श्रीराम' के नारे गूंजते हैं।

आदित्यनाथ अपने श्रोताओं को निराश नहीं करते।

'मुझे सिर्फ हिन्दुत्व के लिए वोट दीजिए, विकास के लिए नहीं।' जाहिर है कि आदित्यनाथ अपनी पार्टी के आधिकारिक एजेंडा से बंधे नहीं हैं। दरअसल, पिछले दो सालों से, जब से उन्होंने महंत अवैद्यनाथ के बाद गोरखनाथ मन्दिर के उपप्रमुख का जिम्मा सम्भाला है, वह संघ परिवार के दायरे के बाहर अपने लिए एक स्वतंत्र हिन्दुत्व की रियासत बनाने में मुब्तिला हैं। उसके केसरिया प्रतिबद्धता साफ है और उनके अनुयायी निर्लज्ज हैं।

''पूर्वांचल में रहना है तो योगी, योगी कहना होगा' वे चिल्लाते हैं। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है। दूसरे दिन अपने कार्यालय में एक्सप्रेस संवाददाता से बात करते हुए उन्होंने खुल कर अपने विचारों को रखा था 'आप मुसलमानों की क्या भूमिका देखते हैं, हम उन्हें पूछते है। 'हम उन्हें भगा नहीं सकते' वह कहते हैं। 'वे यहां रह सकते हैं लेकिन उन्हें मुख्यधारा से जुड़ना होगा।' वह विवरण नहीं देते हैं।

अपनी धमकी को पूरा करने के लिये आदित्यनाथ के पास ताकत है। उनका दो साल पुराना सांस्कृतिक संगठन हिन्दू युवा वाहिनी की शाखा समूचे इलाके में फैली हैं। उसने ब्लाक स्तर पर दो दर्जन से अधिक हिन्दू संगमों का आयोजन किया है और उनका आधार बढ़ रहा है क्योंकि 'हिन्दू जागृति' से सम्बधित किसी भी चीज में वह निर्णायक हैं।

'जब एक पान चबाते हुए एक मुस्लिम के मुंह के छींटे एक हिन्दू पर गिरे तो तत्काल अपने बाहुबल के इस्तेमाल के लिए हिन्दू युवा वाहिनी वहां थी। जब एक मुस्लिम ने कथित तौर पर एक हिन्दू स्त्री का बलात्कार किया और जब मुसलमान किसानों ने अपना खेत चर रहे बैल को मार दौड़ाया, वाहिनी के लोग हिन्दू स्वाभिमान की रक्षा के नाम पर आगे आये। गोधरा की हत्याओं के बाद, आदित्यनाथ ने एक विशाल जन-सभा में कहा था : 'मैंने मोदी जी से बात की है और उनसे कहा है कि हमारी तरफ से एक विकेट गिरने पर दूसरे

पक्ष की दस विकेट लेना। अपने घरों पर केसरिया झण्डा फहराइये और अपने अड़ोस-पड़ोस के मुसलमानों की संख्या गिनिये। हमें जल्द ही कुछ करना पड़ सकता है।'

जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आ रहे हैं, तो योगी की भाषा में मेल-जोल बढ़ता दिखता है। 'मैं मुसलमानों के वोट चाहता हूं, लेकिन पहले उन्हें गंगाजल में धुल दीजिए-..

आप इस नाम को याद रखिये। आने वाले वर्षों में आप योगी आदित्यनाथ का नाम अधिकाधिक सुन सकते हैं।
(URL:http://www.expressindia.com fullstory.php?newsid=30591)

परिशिष्ट 2

बाग़ी एक सांसद, भाजपा में सांसत

(नलिनी वाजपेयी, सहारा समय)

महंत योगी आदित्यनाथ ने पिछले हफ्ते उप प्रधानमंत्री लाल कृष्ण आडवाणी को गोरखपुर बुला कर प्रदेश भाजपा नेताओं को मजबूर कर दिया कि वे उनके दरबार में हाजिर हों। पार्टी के शीर्ष नेता द्वारा एक बागी सांसद की पीठ थपथपाना प्रदेश अध्यक्ष विनय कटियार और नगरविकास मंत्री लालजी टंडन को शायद ही रास आया हो पर उन्हें आडवाणी द्वारा गोरखपुर के महत्वाकांक्षी सांसद की तारीफ पर तालियां बजानी पड़ीं। विनय कटियार ने तो अपने इस दर्द को जबान पर लाने की कोशिश भी की। उन्होंने कहा कि शिलान्यास और उद्घाटन तो बहुत हुए हैं पर अच्छा होता कि यह सब कमल के चिन्ह तले होता।

पार्टी का प्रदेश नेतृत्व योगी आदित्यनाथ की पार्टी विरोधी गतिविधियों से अनजान नहीं है। पिछले विधानसभा चुनावों में योगी ने गोरखपुर और पूर्वांचल की कई दूसरी सीटों पर पार्टी के अधिकृत उम्मीदवारों के खिलाफ बागी खड़े किए थे और भाजपा को कई सीटें गंवानी पड़ी थी। चुनाव सभाओं में उन्होंने खुल कर कहा था कि भाजपा का चेहरा बदल गया है और जनता को इस दोगली पार्टी का विरोध करना चाहिए।

प्रदेश भाजपा प्रवक्ता हृदयनाथ दीक्षित भी मानते हैं कि 'महंत आदित्यनाथ ने पिछले दो साल से पूर्वांचल में भाजपा से इतर अपना संगठन कर लिया है। लेकिन वे योगी की हिंदू वाहिनी को पार्टी विरोधी मानने से हिचकिचाते हैं।

उनकी दलील है कि हिन्दू वाहिनी सांस्कृतिक संगठन है जबकि भाजपा राजनीतिक पार्टी। भाजपा के सदस्य अगर कोई सांस्कृतिक या सामाजिक संगठन चलाते हैं तो इस पर पार्टी को आपत्ति नहीं है, बशर्ते इन संगठनों के उद्देश्य और भाजपा की नीतियों में कोई विरोध न हो।

गोरखपुर क्षेत्र के योगी विरोधी भाजपा नेता इस तर्क से सन्तुष्ट नहीं हैं। उनकी मांग है कि प्रदेश भाजपा की अनुशासन समिति की उस सिफारिश पर अमल होना चाहिये जिसमें पिछले विधानसभा चुनावों में पार्टी का विरोध करने वाले आदित्यनाथ जैसे नेताओं पर सख्त कार्रवाई की बात कही गई है।

चार बार सांसद रहे गोरखपुर पीठ के आक्रामक हिन्दू नेता महंत अवैद्यनाथ के उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ को इस बात की जरा भी परवाह नहीं है। उन्होंने न सिर्फ भाजपा के प्रदेश नेतृत्व को ताक पर रखा है बल्कि प्रधानमंत्री और केन्द्रीय मंत्री की भी खुली अवहेलना की है। हाल में हरियाणा की ओम प्रकाश चौटाला सरकार को हिन्दू विरोधी करार देकर उन्होंने राजग के लिए संकट पैदा करने की कोशिश की।

भाजपा में ऐसे कम ही होंगे जो पार्टी के समानान्तर संगठन खड़ा कर कार्यक्रम कर रहे हों। बावजूद भाजपा संगठन चुप है। वास्तव में पूर्वांचल में भाजपा मजबूर है।

योगी ने पूर्वांचल के तमाम जिलों में भाजपा का जनाधार छीन लिया है। उनके आक्रामक अभियान के कारण भाजपा कार्यकर्ता योगी के साथ खड़े हैं। इसका एहसास भाजपा को तब हुआ जब सदस्यता अभियान के दौरान पूर्वांचल के कई जिले ठंडे पड़े रहे। पार्टी नेताओं को एहसास है कि गोरखपुर में योगी आदित्यनाथ का भारी प्रभाव है। उन्होंने पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा के एक मंत्री शिवप्रताप शुक्ल को डंके की चोट पर अपना प्रत्याशी खड़ा कर हरवा दिया था। यही नहीं पिपराइच और मुंडेरवा में भी उनके प्रत्याशी खड़े थे।

...भाजपा को एहसास है कि पूर्वांचल में वह तभी चुनावी वैतरणी पार कर

पाएगी जब योगी का साथ होगा।

योगी को भी भाजपा की इस मजबूरी का पता है, इसलिए वे इस बात को लेकर निश्चिन्त हैं कि उनके खिलाफ आलाकमान कोई कार्रवाई कर सकता है। अब वे भाजपा को ही घुटने टिकवा देने के लिए आमादा हैं।

परिशिष्ट 3

आठवें विश्व हिन्दू महासम्मेलन में पारित किये गये तीन प्रस्ताव

प्रस्ताव 1.

धर्माचार्यों की यह सभा धर्मप्राण हिन्दुओं का आह्वान करती है कि वे नेपाल के सनातन हिन्दू चरित्र, इतिहास और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये व्यापक जन-जागरण अभियान में सक्रिय रूप से सहभागी हों क्योंकि हिन्दुत्व के प्रचण्ड जागरण में ही हिन्दू हितों का संरक्षण निहित है। यह सभा सभी धर्माचार्यों से नेपाल में हिन्दुत्व और हिन्दू संस्कृति की रक्षा के इस पवित्र यज्ञ में बढ़-चढ़ कर आहुतियां डालने का आग्रह करते हुए यह मांग करती है कि

- 95 से अधिक हिन्दू धर्मावलम्बियों की जनसंख्या वाले परम्परागत हिन्दू राष्ट्र नेपाल को पूर्ववत संवैधानिक हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाये।

- नेपाल में वर्तमान संविधान के अनुसार संवैधानिक राजतंत्र और बहुदलीय लोकतंत्र को यथावत कायम रखा जाये।

- नेपाल में धर्मांतरण पर पूर्णतः रोक हो और सम्पूर्ण गौ-वंश के वध पर भी विधायी प्रतिबन्ध लगे।

प्रस्ताव 2

हिन्दू समाज के अभिन्न अंग हम संतगण हिन्दुओं की व्यथा से उद्वेलित होकर जहां राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दू समाज के साथ किये जा रहे अपमानजनक व्यवहारों की भर्त्सना करते हैं तथा भारत-नेपाल सहित संसार के

उन सभी देशों की सरकारों, संबंधित मानवाधिकार आयोगों और प्रबुद्ध नागरिकों से यह मांग करते हैं कि विश्व की सबसे उदात्त, वरेण्य और प्राचीन किन्तु चिरनवीन हिन्दू संस्कृति, धर्म और समाज की अवहेलना और भेदभावपूर्ण दुर्व्यवहार की पुनरावृत्ति से बाज आयें अन्यथा यदि डेढ़ अरब से अधिक जनसंख्या वाला विराट हिन्दू समाज क्षुब्ध और उग्र होकर प्रतिकार के लिये विवश होगा तो असहिष्णु, बर्बर, आततायी संस्कृतियों और उनके अनुयायी राष्ट्रों का अस्तित्व भी नहीं रहेगा। इसलिये यह धर्म सभा सर्वसम्मति से प्रस्ताव करती है कि

- स्वतंत्रता के पश्चात् जिस प्रकार विदेशी प्रधान, संविधान और निशान को हटा कर स्वदेशी प्रधान, संविधान और निशान को पुनःप्रतिष्ठित किया गया उसी तरह गुलामी के दिनों में विधर्मियों द्वारा ध्वस्त किये गये हिन्दू मानबिन्दुओं की पुनःप्रतिष्ठा के संदर्भ में कोटि-कोटि हिन्दुओं की आस्था के केन्द्र काशी में विश्वनाथ मंदिर, मथुरा में श्रीकृष्ण मंदिर और अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के पुनर्निर्माण का अधिकार हिन्दुओं को सौंपा जाय ताकि हिन्दू स्वदेश तथा स्वराज में पुनः पूर्ण स्वाभिमान के साथ रह सकें।

एतदर्थ हिन्दू धर्माचार्यों की यह सभा प्रस्ताव करती है कि भारत सरकार स्वयं उपर्युक्त हिन्दू मानबिन्दुओं की पुनःस्थापना के लिये संबंधित पक्षों से विशेषतः मुसलमानों से बात करे और जैसे सोमनाथ मंदिर का पुनरुद्धार और पुनर्निर्माण किया गया उसी तरह उक्त हिन्दू मंदिरों की पुनःस्थापना के लिए उन्हें प्रेरित करे, किन्तु यदि ऐसा किसी पक्ष के दुराग्रहवश संभव न हो तो हमारी मांग है कि भारत सरकार स्वयं हस्तक्षेप कर ऐसा कानून पारित करे ताकि स्वतंत्र भारत में हिन्दू धर्मस्थानों की पुनःस्थापना का मार्ग प्रशस्त हो सके।

- विश्व हिन्दू महासम्मेलन गोरखपुर में एकत्र हिन्दू धर्माचार्यों-संतों की यह सभा यह प्रस्ताव भी करती है कि विश्व के विभिन्न देशों में जहां हिन्दू अल्पसंख्यक के रूप में निवास कर रहे हैं वहां उनके साथ दूसरे-तीसरे दर्जे के नागरिकों जैसा अपमानजनक और भेदभावपूर्ण व्यवहार न किया जाए तथा उन्हें भी स्वधर्म के पालन की समान रूप से छूट दी जाए।

- हिन्दू धर्माचार्यों की यह सभा अंतर्राष्ट्रीय हिन्दू संगठन विश्व हिन्दू महासंघ तथा विभिन्न देशों में स्थापित इसकी इकाइयों से यह मांग करती है कि वे यूनेस्को द्वारा परामर्शी हैसियत प्राप्त हिन्दुओं की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था के रूप में जहां-जहां हिन्दुओं का उत्पीड़न, उनके स्वधर्म पालन में बाधा और नागरिक के रूप में उनसे भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जा रहा हो वहां-वहां संबंधित देशों की सरकारों से संयुक्त राष्ट्रसंघ से तथा संबंधित देशों के मानवाधिकार संगठनों से मिल कर हिन्दू उत्पीड़न के मुद्दों को प्रमुखता से उठायें तथा हिन्दुओं की समस्याओं के समाधान के लिए जागरूक और अग्रसर हों।

प्रस्ताव 3

1. भारत के सात माननीय न्यायाधीशों ने अक्तूबर 2005 में सम्पूर्ण गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने का जो दिशा-निर्देश निर्गत किया था उसे सार्वदेशिक स्तर पर अविलम्ब लागू किया जाये अन्यथा संतों को विराट हिन्दू समाज के साथ पुनः उग्र और परिणामदायी आंदोलन के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

2. इस सम्बन्ध में विभिन्न राज्यों में जो कानून बने हैं उनमें कई कमियां हैं और कई ऐसी शर्तें भी हैं जिनके कारण गोहत्यारों को गोवध की छूट मिल जाती है अतः ऐसे आधे-अधूरे कानूनी प्रावधानों को संशोधित कर कारगर और प्रभावी कानून बनाया जाये।

3. विश्व हिन्दू महासंघ नेपाल सहित अन्य सदस्य देशों की सभी सरकारों से तथा विश्व की अन्य सरकारों से भी यह मांग करे कि वे हिन्दू भावनाओं का सम्मान करते हुए गोवंश के वध पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये आवश्यक विधायी कदम उठाये।

पुस्तिका सीरीज़—21

योगी परिघटना

पूर्वी उत्तर प्रदेश में 'हिन्दू राष्ट्र' की दस्तक

सुभाष गाताडे

प्रकाशक :
***isd* इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी**
फ्लैट नम्बर-110, नम्बरदार हाउस,
62-ए, लक्ष्मी मार्केट, मुनिरका
नई दिल्ली-110067
टेलीफोन 011-26177904, टेलीफैक्स 011-26177904
ईमेल : notowar@rediffmail.com

प्रकाशन वर्ष :
फरवरी 2007

केवल सीमित वितरण के लिए

(विशेष सूचना : प्रस्तुत किताब का कोई कॉपीराइट नहीं है, गैरव्यावसायिक, जनकल्याण के कामों के लिये उसका अथवा उसके अंशों का बेधड़क इस्तेमाल किया जा सकता है। प्रकाशन की सूचना हमें दे सकें तो हमें खुशी होगी।)

isd **इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी**
फ्लैट नम्बर-110, नम्बरदार हाउस,
62-ए, लक्ष्मी मार्केट, मुनिरका
नई दिल्ली-110067
टेलीफोन 011-26177904, टेलीफैक्स 011-26177904
ईमेल : notowar@rediffmail.com
केवल सीमित वितरण के लिए